thearyasamaj.org

नूतन निष्काम पत्रिका

स्थापना वर्ष:१९४२

❒ वर्ष-6 ❒ अंक-4 ❒ मुम्बई ❒ अप्रैल-2015 ❒ मूल्य-रु.9/-

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का ११वाँ वार्षिकोत्सव २०१५ * एवं अग्निहोत्री परिवार सम्मान समारोह के कुछ चित्र

मंगलाचरण मंत्रोच्चार करते हुए पुरोहित गण।

युवा गायक श्री योगेश आर्य भजन प्रस्तुत करते हुए।

वयोवृद्ध आर्य नेता एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभा दिल्ली के पूर्व प्रधान आदरणीय श्री प्रतापभाई शूरजी वल्लभदास प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए। साथमें श्री अरुण अब्रोल, श्री वेदप्रकाश गर्ग, श्री विनोदकुमार शास्त्री एवं पं. नरेन्द्र शास्त्री।

श्री संगीत शर्मा महामंत्री आर्य समाज सांताक्रुज़ प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए।

श्री लालचन्द आर्य प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए।

माता श्रीमती शिवराजवती आर्या प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए। साथमें श्री अरुण अब्रोल, पं. प्रभारंजन पाठक, श्री वेदप्रकाश गर्ग एवं श्री विनोद कुमार शास्ती।

सम्मान स्वरुप प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए श्री शिवकुमार खुराना एवं श्रीमती कौशल्या खुराना परिवार।

श्री चंद्रगुप्त आर्य एवं श्रीमती यशबाला गुप्ता प्रशस्ति पत्र ग्रहण करते हुए। बायें से श्री अरुण अब्रोल, पं.पाठक एवं वेदप्रकाश गर्ग।

thearyasamaj.org

आर्ष स्वाध्याय आत्मा का भोजन एवं आर्य निर्माण

(स्वध्याये नित्य युक्तः स्थादेवः चैवेह कर्मणा।)

अर्थात : स्वध्याय और शुभ कर्मो में मनुष्य सदा तत्पर रहे।

पं. उम्मेद सिंह विशारद
वैदिक प्रचारक

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने अमर ग्रन्थों में स्वध्याय पर बड़ा बल दिया है वह कहते है कि स्वध्याय से मात्र बुद्धि बल ही नहीं बढ़ता अपितु आत्मबल की वृद्धि की अन्त: प्रेरणा भी प्राप्त होती है। आस्थांओं के अभिवर्धन एवं दृढीकरण के लिये स्वाध्याय अनिवार्य है।

मानव जीवन को सुखी और संस्कारी बनाने के लिए सद्ग्रन्थों का स्वाध्याय करना अत्यन्त आवश्यक है। स्वाध्याय मानव जीवन का सच्चा सुहृदय एवं आत्मा का भोजन है। स्वाध्याय से हमें जीवन को आदर्श बनाने की सत्प्रेरणा मिलती है। स्वाध्याय हमारे जीवन विषयक सारी समस्याओं की कुंजी है। स्वाध्याय हमारे चरित्र निर्माण मे सहायक बन कर हमें प्रभु प्राप्ति की ओर अग्रसर करता है। स्वाध्याय स्वर्ग का द्वार (सुख विशेष) और मुक्ति का सोपान है।

स्वाध्याद् योगमासीत योगात स्वध्यायमामनेत -।
स्वाध्याय योग सम्पत्या परमात्मा प्रकाशते। (योग शास्त्र)
अर्थात- स्वाध्याय से योग की उपासना करे और योग से स्वाध्याय का अभ्यास करें। स्वध्याय की सम्पति से परमात्मा का साक्षात्कार होता है।
गीता में भी कहा है- <u>स्वाध्यायभ्यसनं चैव वाङ्मंय तप उच्यते।</u>
अर्थात- स्वाध्याय करना ही प्राणी का तप है।
<u>स्वाध्याय नित्य युक्त स्यादेव चैवेह कमर्णा।</u> (मनु)
अर्थात- स्वाध्याय और शुभ कर्म में सदा तत्पर रहे।
<u>नित्यं स्वाध्यायशीलश्च दुर्गायन्ति तरन्ति ते -</u> (शान्ति पर्व)
अर्थात- नित्य स्वाध्याय करने वाला व्यक्ति दु:खों से पार हो जाता है।
<u>जिज्ञासा जगाइऐ और अपना ज्ञान भण्डार भरिये-</u>
जिज्ञासा में स्वंय अपनी एक ज्ञान शक्ति होती है। ज्यों जिज्ञासा गहरी होती जाती है। ज्ञान भी बढता जाता है, मनुष्य की जिज्ञासु वृति ने ही उसे दार्शनिक आध्यात्मिक वैज्ञानिक एवं अन्वेषक बनाया है।

<u>समाधान स्वध्याय से</u>

जिज्ञासाओं के समाधान का सबसे उपयुक्त माध्यम स्वाध्याय माना गया है।
<u>स्वाध्याय योग युक्तात्मा परमात्मा प्रकाशते-</u> (महर्षि व्यास)
अर्थात- स्वाध्याय युक्त साधना से ही परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

<u>स्वाध्याय का मूल प्रयोजन आत्मा का शिक्षण</u>

शास्त्रों की तीन आज्ञायें है- <u>सत्यम वद- धर्मचंर- स्वाध्याय मा प्रमद:</u>
अर्थात- सत्य ही बोलें, धर्माचरण करें, और स्वाध्याय में प्रमाद न करें।

<u>स्वाध्याय- महापुरुष ढालने का स्टील प्लान्ट</u>

महर्षि दयानन्द कहते है कि हमारे सारे संकट और दु:ख मात्र का कारण है कि हम अपने बारे में नही जानते। ज्ञान की उपासना मानवता की सेवा है। इसके लिए स्वाध्याय का आश्रय लेना अनिवार्य है! महापुरुष स्वाध्याय से ही बनते है। यह भी सत्य है कि महापुरुष सदैव बने नही रहते किन्तु विचारो और पुस्तकों के रूप में उनकी आत्मा इस धरती पर चिरकाल तक बनी रहती है।

स्वाध्याय की उपेक्षा न करें।

आध्यात्मिक ज्ञान सिद्ध करने में बुद्धि आवश्यक तत्व है। इसके संशोधन संवर्द्धन एवं परिमार्जन के लिए विचार को ठीक दिशा में प्रचलित करना होगा।

<u>उत्तम पुस्तकें जागृत देवता है।</u>

आर्षग्रन्थों का नित्य स्वाध्याय से मनुष्य में देवत्व आता है।

<u>स्वाध्याय का आधार मनन-चिन्तन-</u>

अपने विचारों, व्यवहार एवं नित्य क्रिया का मनन आवश्यक है।

<u>स्वाध्याय जीवन को परिपूर्ण बनाता है।</u>

आर्षग्रन्थों को पढ़ने की आदत मनुष्य की जन्म जात योग्यता के विकास में सहायक होती है।

<u>स्वाध्याय से विद्या की सम्पति बढ़ात चले-</u>

आओ हम भी अपनी शारीरिक, मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करें। अब हम धर्मानुष्ठान करेगें अधिक से अधिक पढ़ेगें-।

<u>स्वाध्याय जीवन को विकसित उच्च और पवित्र बनाने का साधन है</u>

<u>सत्संग की पूर्तिस्वध्याय है- अच्छी पुस्तकें सच्चे मित्र है।</u>
<u>अपने घर में आर्ष साहित्य का पुस्तकालय बनाइऐ- ज्ञान देवता का मन्दिर हो।</u>
<u>सर्वोत्कृष्ट परमार्थ- ज्ञान-यज्ञ- सत शास्त्रों का अध्ययन आत्मा का उत्थान सच्ची सम्पदा ज्ञान का भण्डार है। आत्म ज्ञान सबसे बड़ा ज्ञान</u>
<u>आत्मनिवेदन</u>- हमें एक और बात ध्यान रखनी चाहिए कि पुस्तकें हमारे को सजाने व प्रदर्शिनी लगाने के लिए ही न खरीदी जाए वरन उनका नियमित स्वाध्याय जीवन के अन्य कार्यक्रमों की तरह आवश्यक अंग बना लेना चाहिए। दैनिक दिनचर्या में कम से कम एक घन्टा तो आर्य ग्रन्थों का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। देखने में आ रहा है कि आर्य जगत में अधिकांश आर्य जन स्वाध्याय को अनिवार्य दिन चर्या नहीं बना रहे हैं परिणाम स्वरूप आर्ष सिद्धान्तों का अज्ञान पुरूषार्थ व पूरा क्रम का अभाव के कारण परस्पर ईर्ष्या द्वेष व आर्य समाज के विकास के लिए प्रयत्नशील न होना आदि है।

आइए हम आर्य नित्य जीवन का स्वध्याय, आर्ष ग्रन्थों के स्वध्याय की परम आदत डालें। तभी हम <u>कृण्वन्तो विश्वमायर्म</u> बना सकते है।
<u>यथा यथा हि पुरुषं शास्त्र समधि गच्छिति।</u>
<u>तथा तथा विज्ञानाति विज्ञांन चास्य रोचते।।</u>
अर्थात- जैसे जैसे मनुष्य शास्त्रों का अध्ययन करता है
वैसे वैसे उसकी ज्ञान राषि बढती जाती है।
जैसे सूर्य के उदय होनेसे कमल रत्न विकसित होता है।
स्वाध्याय से बुद्धि का विकास होता है।

गढ़ विकास, मोहकमपुर, देहरादून
मो. 94115 12019

thearyasamaj.org

आर्य समाज सांताक्रुज़, मुम्बई का मासिक मुखपत्र
वर्ष : ६ अंक ४ (अप्रैल -२०१५)

- दयानंदाब्द : १९२, विक्रम सम्वत् : २०७१
- सृष्टि सम्वत् : १,९६,०८,५३,११६

प्रबन्ध संपादक : चन्द्रगुप्त आर्य
संपादक : संगीत आर्य
सह संपादक : संदीप आर्य
कार्यकारी संपादक : विनोद कुमार शास्त्री
लालचन्द आर्य, रमेश सिंह आर्य,
यशबाला गुप्ता.

विज्ञापन की दरें : शुल्क

- पूरा पृष्ठ : रु. ३,०००/-
- एक प्रति : रु. ९/-
- १/२ पृष्ठ : रु. २,०००/-
- वार्षिक : रु. १००/-
- १/४ पृष्ठ : रु. १,५००/-
- आजीवन : रु. १०००/-
- विशेषांक की दरें भिन्न होंगी।

वर्गीकृत विज्ञापन
रु. १०/- प्रति शब्द, न्यूनतम रु. ५००/-
चैक /डीडी / मनी आर्डर आदि 'आर्य समाज सान्ताक्रुज' के नाम से ही भेजें, मुंबई के बाहर के चैक न भेजे। विज्ञापन सामग्री १० तारीख तक भेजें। 'नूतन निष्काम पत्रिका' का मुद्रण ऑफसेट विधि से होता है।

पता : आर्य समाज सांताक्रुज़
(विठ्ठलभाई पटेल मार्ग) लिंकिंग रोड, सांताक्रुज़ (प.), मुंबई -५४. फोन : २६६० २८००, २६६० २०७५

अनुक्रमणिका	पृष्ठ सं.
आर्ष स्वाध्याय आत्मा का भोजन	२
सम्पादकीय	३-५
जी एम बीज समाधान हैं या	५-६
विजार शक्ति का चमत्कार	७
भारतीय महीनों के नाम और उनका औचित्य	८
कर्म एक तप है	९
सन्ध्या-एक चिंतन	१०-११
समाचार ...	१२
''क्रोध से बचाव''	१३-१४
सहिष्णुता-सदाचार-समृद्धि.......	१५

सम्पादकीय

महर्षि और यज्ञ

- संगीत आर्य- 9323 573 892

महर्षि के वेद भाष्य में यज्ञ शब्द की विस्तृत एवं व्यापक व्याख्या महर्षिने की हैं। ऋग्वेद के पहले ही मन्त्र में अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। (अ.1, अ.1, व-1) में होतारं रत्नधातमम्। महर्षि ने यज्ञ के अर्थ को लिखा है।

इस मन्त्र के ईश्वराभिप्राय अर्थ में महर्षि अग्नि शब्द से परमेश्वर का ग्रहण होता है, ऐसा लिखते हैं। पूर्वोक्त अग्नि कैसा है कि (पुरिहितः) सब देहधारियों की उत्पत्ति से प्रथम ही सब जगत् और स्वभक्त धर्मात्माओं के लिये सब पदार्थों की उत्पत्ति जिसने की है और विज्ञानादि दान से जो जीवादि सब संसार का धारण और पोषण करता है इससे परमात्मा का नाम पुरोहित है। --

(यज्ञस्य देवम्) यज धातु से यज्ञ शब्द सिद्ध होता है। इसका यह अर्थ है कि अग्निहोत्र से लेके अश्वमेधपर्यन्त विविध क्रियाओं से जो सिद्ध होता है, जो वायु और वृष्टिजल की शुद्धि द्वारा सब जगत् को सुख देने वाला है उसका नाम यज्ञ है। अथवा परमेश्वर के सामर्थ्य से सत्त्वगुण, रजोगुण और तमोगुण इन तीनों गुणों की जो एक अवस्थारूप कार्य उत्पन्न हुआ है जिसका प्रकृति, अव्यक्त और अव्याकृतादि नामों से वेदादि शास्त्रों में कथन किया है, उससे लेके पृथिवी पर्यन्त कार्यकारक संगति से उत्पन्न हुआ जो जगत् रूप यज्ञ है अथवा सत्यशास्त्र सत्यधर्माचरण सत्यपुरुषों के संग से जो उत्पन्न होता है, जिसका नाम विद्या, ज्ञान और योग है, उसका भी नाम यज्ञ है। इन तीनों प्रकार के यज्ञों का जो देव है, जो सब सुखों का देने वाला, जो सब जगत् का प्रकाश करने वाला, जो सब भक्तों को आनन्द कराने वाला, इससे ईश्वर का नाम देव है।

(ऋत्विजम्) जो सब ऋतुओं में पूजने योग्य है। जो सब जगत् का रचने वाला और ज्ञानादि यज्ञ की सिद्धि को करने वाला है, इससे ईश्वर का नाम ऋत्विज् है।

इसी मन्त्र के दूसरे अर्थ, 'व्यवहार विद्या के अभिप्राय से' में वे लिखते हैं,

(अग्निमीळे) इस अर्थ में अग्नि शब्द से भौतिक अग्नि जो यह जलाने और ऊपर चलने वाला है तथा सब पदार्थों का अलग-अलग करने और बल देने वाला तथा जिसका रूपगुण है और मूर्तिमान् द्रव्यों का जो प्रकाशक है, ज्वालारूप उसका ग्रहण किया जाता है। मैं उस अग्नि की स्तुति करता हूँ। उसके गुणों का अन्वेषण अर्थात् खोज करता हूँ। अग्नि में कौन गुण हैं और किस-किस विद्या की सिद्धि होती है। जो-जो कलाकौशल सवारी चालनादि पदार्थ विद्याओं की सिद्धि करने के उत्तम गुण हैं सो-सो अग्नि से ही प्राप्त होते हैं। इससे अग्नि ही शिल्पविद्या का मुख्य कारण है। क्योंकि बिना अग्नि से कोई भी उत्तम गुण वाली पदार्थ विद्या सिद्ध नहीं हो सकती। इसीसे जो विद्वान लोग पदार्थविद्या में हो गये, होते हैं और होंगे, उन सबों ने पदार्थविद्या में अग्नि को ही मुख्य साधन माना है, मानते हैं और मानेंगे।..

(पुरोहित) इसीसे इस अग्नि को पुरोहित मानना। विमान कला, कौशल, क्रिया चालनादि गुणों का ग्रहण करने वाला है। और सब क्रियाओं में प्रथम हेतु होने से अग्नि का नाम पुरोहित है।

(यज्ञस्य देवं) यज्ञ का देव अर्थात् विविध क्रियाओं से जो शिल्पविद्या बनती है उस विद्या का प्रकाश करने वाला है सो देव है।

इस मन्त्र के भाष्य के अंत में महर्षि का लेखन आज के संदर्भ विशेष ध्यान एवं चिंतन मनन करने वाला हैं। महर्षि लिखते हैं कि सायणाचार्य आदि ने भौतिक अग्नि का ही ग्रहण किया है, जिसमें होम करते हैं। इस अर्थ से भिन्न अर्थ का ग्रहण नहीं किया है। इसका खण्डन संस्कृत में लिखा है वहाँ समझ लेना। उपरोक्त महर्षि के भाष्य से यज्ञ शब्द का

thearyasamaj.org

यजुर्वेद में अनेकों मन्त्रों में यज्ञ विधि का वर्णन मिलता है किन्तु महर्षि इस यज्ञ विधि का वर्णन मिलता है। किन्तु महर्षि इस यज्ञ विधि को होम तक सीमित न रखते हुए अग्निहोत्र की क्रिया को प्रतीक मानकर उसका भावार्थ व्यवहारिक ज्ञान और कर्म के रुप में करते हैं। प्रथम अध्याय का द्वितीय मन्त्र एवं 12 वां मन्त्र देखिए।

वसोः पवित्रमसि द्यौरसि पृथिव्यसि मातरिश्वनो घर्मो ऽसि विश्वधाऽअसि।
परमेण धाम्ना दृँहस्व मा ह्वार्मा ते यज्ञपतिर्ह्वार्षीत् ॥2॥

पदार्थ- हे विद्यायुक्त मनुष्य ! तू जो वसोः= यज्ञ पवित्रम्=शुद्धि का हेतु असि = है, द्यौः= जो विज्ञान के प्रकाश का हेतु और सूर्य की करणों में स्थिर होनेवाला असि = है, जो पृथवि = वायु के साथ देशदेशान्तरों में फैलनेवाला असि = है जो मातरिश्वनः= वायु को घर्मः=शुद्ध करनेवाला असि= है, जो विश्वधाः= संसार का धारण करनेवाला असि= है तथा जो परमेण = उत्तम धाम्ना= स्थान से दृँहस्व = सुख का बढ़ानेवाला है, इस यज्ञ का मा= ह्वाः= त्याग कर तथा ते= तेरा यज्ञपतिः= यज्ञ की रक्षा करनेवाला यज्ञमान भी उसको मा= न ह्वार्षीत्= त्यागे। धात्वर्थ के अभिप्राय से यज्ञ शब्द का अर्थ तीन प्रकार का होता है, अर्थात् एक जो इस लोक और परलोक के सुख के लिए विद्या, ज्ञान और धर्म के सेवन से वृद्ध, अर्थात् बड़े-बड़े विद्वान् हैं, उनका सत्कार करना। दूसरा, अच्छी प्रकार पदार्थों के गुणों के मेल और विरोध के ज्ञान से शिल्पविद्या का प्रत्यक्ष करना और तीसरा, नित्य विद्वानों का समागम अथवा शुभगुण, विद्या, सुख, धर्म और सत्य का नित्य दान करना है ॥2॥

भावार्थ- मनुष्य लोग अपनी विद्या और उत्तम क्रिया से जिस यज्ञ का सेवन करते हैं, उससे पवित्रता का प्रकाश, पृथवि का राज्य, वायुरूपी प्राण के तुल्य राजनीति, प्रताप, सबकी रक्षा, इस लोक और परलोक में सुख की वृद्धि, परस्पर कोमलता से वर्तना और कुटिलता का त्याग इत्यादि श्रेष्ठ गुण उत्पन्न होते हैं, इसलिये सब मनुष्यों को परोपकार तथा अपने सुख के लिए विद्या और पुरूषार्थ के साथ प्रीतिपूर्वक यज्ञ का अनुष्ठान नित्य करना चाहिये ॥2॥

कृष्णो ऽस्याखरेष्ठो ऽग्नये त्वा जुष्टं प्रोक्षामि वेदिरसि बर्हिषे त्वा जुष्टां प्रोक्षामि बर्हिरसि स्रुग्भ्यस्त्वा जुष्टं प्रोक्षामि ॥1॥

पदार्थ जिस कारण यह यज्ञ आखरेष्ठः= वेदी की रचना से खुदे हुए स्थान में स्थिर होकर कृष्णाः= भौतिक अग्नि से छिन्न, अर्थात् सूक्ष्मरूप और पवन के गुणों से आकर्षण को प्राप्त असि= होता है, इससे अग्नये= भौतिक अग्नि के बीच में हवन करने लिए जुष्टम् = प्रीति के साथ शुद्ध किये हुए त्वा = उस यज्ञ, अर्थात् होम की सामग्री को प्रोक्षामि= घी आदि पदार्थों से सींचकर शुद्ध करता हूँ और जिस कारण यह वेदिः= वेदी अन्तरिक्ष में स्थित असि= होती है, इससे मैं बर्हिषे= होम किये हुए पदार्थों को अन्तरिक्ष में पहुँचाने के लिए जुष्टाम् = प्रीति सम्पादन की हुई त्वा= उस वेदी को प्रोक्षामि= अच्छे प्रकार घी आदि पदार्थों से सींचकर शुद्ध करता हूँ तथा जिस कारण यह बर्हिः= जल अन्तरिक्ष में स्थिर होकर पदार्थों की शुद्धि करानेवाला असि= होता हैं, इससे त्वा= उसकी शुद्धि के लिए जो कि शुद्ध क्रिया हुआ जुष्टम्= पुष्टि आदि गुणों को उत्पन्न करनेहारा हवि है, उसको मैं स्रुग्भ्य= स्रुवा आदि साधनों से अग्नि में डालने के लिए प्रोक्षामि= शुद्ध करता हूँ ॥1॥

भावार्थ-ईश्वर उपदेश करता है कि सब मनुष्य को वेदी बनाकर और पात्र आदि होम की सामग्री लेके उस हवि को अच्छी प्रकार शुद्ध कर तथा अग्नि में होम करके किया हुआ यज्ञ वर्षा के शुद्ध जल से सब ओषधियों को पुष्ट करता है। उस यज्ञ के अनुष्ठान से सब प्राणियों को नित्य सुख देना मनुष्यों का परम धर्म हैं ॥1॥

पवित्र स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्याच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।

देवीरापोऽअग्रेपुवोऽग्रऽइममद्य यज्ञं नयताग्रे यज्ञपतिँ सुधातु यज्ञपतिं देवयुवम् ॥12॥

पदार्थ हे विद्वान लोगों ! तुम जैसे सवितुः= परमेश्वर के प्रसवे= उत्पन्न किये हुए इस संसार में अच्छिद्रेण= निर्दोष और गति पवित्रे= पवित्र करने का हेतु जो सूर्यस्य= सूर्य की रश्मिभि = किरण हैं, उनसे वैष्णव्यौ= यज्ञ सम्बन्धी प्राण और अपान की गति पवित्रे = पदार्थों के भी पवित्र करने में हेतु स्थः= हों और जैसे उक्त सूर्य की किरणों से अग्रेगुवः= आगे समुद्र वा अन्तरिक्ष में चलें। अग्रेपुवः= प्रथम पृथवि में रहनेवाली सोम ओषधि के सेवन करने तथा देवीः= दिव्यगुणयुक्त वः= वह आपः= जल पवित्र हों। वैसे नयत= पवित्र पदार्थों का होम अग्नि में करो। वैसे ही मैं भी अद्य= आज के दिन इमम्= इस यज्ञम्= पूर्वोक्त क्रियासम्बन्धी यज्ञ को प्राप्त करके अग्रे= जो प्रथम सुधातुम्= श्रेष्ठ मन आदि इन्द्रिय और सुवर्ण आदि धनवाला यज्ञपतिम्= यज्ञ का नियम से पालक तथा देवयुवम्= विद्वान् और श्रेष्ठ गुणों को प्राप्त होने वा उनको प्राप्त कराने यज्ञपतिम्= यज्ञ की इच्छा करनेवाला मनुष्य हैं, उसको उत्पुनामि= पवित्र करता हूँ ॥12॥

भावार्थ-इस मन्त्र में लुप्तोपमालंकार है। जो पदार्थ संयोग से विकार को प्राप्त होते हैं, वे अग्नि के निमित्त से अतिसूक्ष्म परमाणुरूप होकर वायु के बीच रहा करते हैं और कुछ शुद्ध भी हो जाते हैं, परन्तु जैसी यज्ञ के अनुष्ठान से वायु और वृष्टि-जल की उत्तम शुद्धि और पुष्टि होती है, वैसी दूसरे उपाय से कभी नहीं हो सकती। इससे विद्वानों को चाहिए कि होमक्रिया और वायु, अग्नि, जल आदि पदार्थ वा शिल्पविद्या से अच्छी-अच्छी सवारी बनाके अनेक प्रकार के लाभ उठावें, अर्थात् अपनी मनः कामना सिद्धि करके औरों को भी कामना सिद्धि करें। जो जल इस पृथवि से अन्तरिक्ष को चढ़कर वहाँ से लौटकर फिर पृथवि आदि पदार्थों को प्राप्त होते हैं, वे प्रथम और जो मेघ में रहनेवाले हैं, वे दूसरे कहाते हैं। ऐसी शतपथब्राह्मण में मेघ का वृत्र तथा सूर्य का इन्द्र नाम से वर्णन करके युद्धरूप कथा के प्रकाश से मेघविद्या दिखलाई है ॥12॥

यजुर्वेद में वेद मन्त्रों में यज्ञों का वर्णन है किन्तु यह विधि एक प्रतीक रूप में है। जैसे इस सृष्टि में ईश्वर स्वयम यज्ञ कर रहा हैं। उसकी यज्ञ व्यवस्था के अनिरूप अग्निहोत्र को प्रतीक मानकर हमें जीवन में यज्ञ करने चाहिए जो वेद हो एवं सब की भलाई के लिए हो।

यज्ञ को हमें अग्निहोत्र या होम तक ही सीमित न रखना चाहिए। यह विचारने की बात है कि वेदों में यज्ञ के व्यापक अर्थ का वर्णन हैं एवं यज्ञ वर्णन प्रतीक रूप में होते हुए जैसे अग्निहोत्र की क्रिया से सबको लाभ होता है। वैसा ही प्रयास हमें सब की उन्नति के लिये करना चाहिए।

thearyasamaj.org

अब महर्षि दयानन्द के सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ के तीसरे समुल्लास में अग्निहोत्र के सदंर्भ को देखिये यहाँ महर्षि स्पष्ट रूप से यज्ञ न लिखते हुए दैनिक कर्म के रुप में अग्निहोत्र लिख रहे हैं। महर्षि ने वेद भाष्य के माध्यम से यज्ञ का व्यापक अर्थ किया है। अग्निहोत्र तो मात्र एक कर्मकाण्ड है। हमें चाहिए कि इसी अग्निहोत्र की क्रिया से ज्ञान प्राप्त करने अनुसन्धान का कर्म करें यथा अग्निहोत्र से वृष्टिजल। इसके लिये सिर्फ लेखन या दावा करने की बजाय विविध वैज्ञानिक तरीकों से विश्व के सामने Research करनी चाहिए। तभी हम कह सकते हैं कि अग्निहोत्र / यज्ञ से वृष्टिजल आदि परोपकार के कार्य हो सकते हैं। अन्यथा आज भय है कि अग्निहोत्र को सायणाचार्य द्वारा कहें गये होम या अग्निहोत्र तक समित रख कर हम कर्मकाण्ड तक सीमित होकर रह जायेंगे और अन्य मतावलम्बियों की तरह पाखण्ड़ की तरफ बढ़ते जाऐंगे।

संगीत आर्य
9323573892

जी एम बीज समाधान हैं या समस्या?

महाराष्ट्र में बी.जे.पी. सरकार ने चना, चावल, मकाई, बैंगन और कपास की जेनेटिकली मोडी फाइड बीजों के द्वारा खेती के परीक्षणकी स्वीकृति दी हैं।

पिछले ६६ साल के शासन में इस प्रकार के परीक्षण की केन्द्र सरकार को कोई आवश्यक्ता नहीं प्रतीत हुई।

प्रसिद्ध अर्थशास्त्री स्वामीनाथन अंकलेसरिया ऐय्यर का कथन है कि जेनेटिकली मोडीफाइड बीजों से की गई खेती से कोई नुकसान नहीं है। अमेरिका में जी.एम. फसलों का ही उपयोग है। वहाँ के लोग पूर्ण स्वस्थ हैं।

बी.टी. बीजों के सम्बन्ध में यहाँ कुछ शंकाएं उपस्थित हैं-

बी. टी. बीजों का उपयोग अमेरिका में वर्षो से हो रहा हैं। अमेरिका बड़ा देश है। आबादी कम है। अमेरिकी खेती में रासायनिक खादों और किटनाशकोंके प्रयोग से वहाँ की जमीन बंजर (अनुपजाऊ) हो गयी है। उस जमीन में खेती बन्द हो गयी है। वहाँ जैविक पशु, पक्षी, वनस्पति, मानव संबंधित वस्तुऐं डाली जा रही हैं। कालान्तर में वह जमीन उपजाऊ होगी, अब वहाँ अन्यत्र खेती होती है।

भारत में प्रतिव्यक्ति जमीन आधा एकड़ पड़ती है यहाँ वह छोड़ी नहीं जा सकती।

जी एम फसलों से उत्पन्न अन्न, दूध, फल भाजी इत्यादी खाने से अमेरिका में स्वास्थ्य पर कोई अनिष्ट प्रभाव नहीं पड़ता यह कैसे माना जाये? अमेरिका में उच्च कोटि की दवाइयाँ बनती हैं। कुशल डॉक्टर हैं। कुशल डॉक्टरों और आधुनिकतम संसाधनों के केन्द्र चिकित्सालय हैं। यदि वहाँ रोग नहीं हैं, तो चिकित्सा का विकास कैसे हुआ? साधन सम्पन्न लोग चिकित्सा के लिए अमेरिका जाते हैं।

जी एम फसलों में रासायनिक खादों और कीटनाशकों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में होता है। इनका कुप्रभाव अन्न फलभाजी और जल वायु पर अनिवार्य रूप से पड़ता है। क्या ये वस्तुएं निरापद है?

विदेशी खेती से उत्पन्न अन्न आदि के उपयोग से कैंसर, टी.बी., त्वचा रोग, उदर रोग, हृदय रोग, मधुमेह, ब्लडप्रेशर इत्यादि रोग होते हैं।

विदेशी कम्पनियों की लूट का शिकार देश का किसान बड़े संकट का सामना कर रहा है। रासायनिक खाद आदि के प्रयोग से पंजाब की ३० प्रतिशत जमीन बंजर हो चुकी है। बी.टी. बैंगन में कीटाणुनाशक पाये गये है।

पाश्चात्य जीवन पद्धति बड़े-बड़े उद्योगों पर आधारित है। उन्होंने बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ खड़ी कर दी हैं। ये कम्पनियाँ बीज, रासायनिक खादें कीटनाशक, खेती के उपकरण- ट्रॅक्टर, कटिंग एंड थ्रेसिंग कम्बाइन मशीन (गेहूं की बालियॉ काटकर अनाज निकालनेवाली मशीन), पम्पिंग मशीन, इत्यादि वस्तुएं बेचती हैं। फलस्वरूप किसान का धन इन्हीं विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की जेब में चला जाता है। बेकारी बढ़ती है। किसान मजदूरी के लिए शहर भाग रहा है।

किसान अपना कर्ज इस खेती से नहीं चुका पाता। कुटुम्ब के लिए आहार, कपड़ेलते, दवाई, लड़कों की पढ़ाई-लिखाई, शादी विवाह, नातेरिस्ते के खर्च इत्यादि के लिये धन कहाँ से लाये? फलस्वरूप गाँव छोड़ कर शहर की ओर मजदूरी के लिए भागता है। बँक आदि से लिया हुआ ऋण नहीं चुका पाता। वह आत्म हत्या करता है।

जी एम फसलों के लिए-(१) बीज पुन:पुन: खरीदने फड़ते हैं। २) चार पानीदेने पड़ते हैं। (३) कपास पर खाद और कीटाणुनाशक के २५ छिड़काव करने पड़ते हैं। कपास विषैली हो जाती है किड़े पैदा होकर मर जाते हैं। (४) अनेक प्रकार के रोग जी.एम. अन्न फल खाने से ही दुनिया में फैले हैं। (५) बीजसे लेकर अन्न तैयार होने तक सारी प्रक्रिया विदेशी कम्पनियों की लूट की कहानी है (६) भारत के इतिहास में किसानों की आत्म हत्या पाश्चात्य खेती की देन है।

विषमुक्त नैसर्गिक खेती –

हजारों वर्षों से चली आ रही भारतीय खेती में बीज किसी से खरीदने नहीं पड़ते। प्रत्येक किसान की पारम्पारिक खेती से ही प्राप्त होते हैं।

खाद– गाय, बैल, भैंस के गोबर, मूत्र और जैविक साधनों से यहाँ किसान खाद तैयार कर लेता है। भेड़ बकरियाँ खेतों मे बैठनेसे उत्तम खाद प्राप्त होती है । जैविक स्वाद एक बार के प्रयोग से तीसरे साल तक प्रभावशाली रहती है।

कीटाणुनाशक– नीम की पत्ती, गोमूत्र, करंज आदि से कीटाणु नाशक तैयार किये जाते हैं। ये भूमि, जल, अन्न, फलफूल, दूध, जल वायु पर घातक विषैला प्रभाव नहीं डालते।

पानी– गेहूं, जौ, चना, सरसों के लिए केवल दो पानी पर्याप्त हैं।

चावल, (घाना) बाजरा, अरहर, मक्का, ज्वार बरसाती पानी से होते हैं। केवल चावल को कुछ अधिक पानी दिया जाता है।

साधन– हल- बैलों से सारे काम होते हैं। किसान की पाई नहीं खर्च होती।

thearyasamaj.org

विज्ञान– विज्ञान पुरातन काल से मनुष्य जीवन का साथी है।

विनोबाजी विज्ञान के समर्थक हैं। पर विज्ञान के ध्वंसक रूप को उन्होंने अस्वीकार किया है। वे शून्य बजट की गोकेन्द्रित अर्थ व्यवस्थाके समर्थक हैं। विज्ञान बड़े यन्त्रों के स्थान पर छोटे यन्त्र भी बना सकता है। बैलों द्वारा चलनेवाले ट्रॅक्टर बन चुके हैं। पर सरकारी नीति के कारण उपेक्षा का शिकार होना पड़ा है। बैंलो से चलनेवाला वाटरपम्प बन चुका है। पशुउर्जा के उपयोग से शून्यबजट की गोकेन्द्रित अर्थव्यवस्था सम्भव है।

बाबा रामदेवने अपने पंतंजलि योग पीठ में विषमुक्त नैसर्गिक खेती का प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया है।

बीजामृत– इस केन्द्र में बीजों को उपचारितकर बीजामृत तैयार करते हैं।

खाद– 'संजीवक खाद' नैसर्गिक घटकों से निर्मित इस खाद से फसल की योग्य वृद्धि के साथ रोगों से बचाव होता है। बाबा के प्रयोग से एक एकड़ में ८० (अस्सी) क्विंटल बैंगन हुए हैं। विषमुक्त खेती के लिए संजीवक खाद, कम्पोस्ट खाद, हरी खाद तैयार करने की विधि बाबा के प्रशिक्षण केन्द्र में सिखाई जाती है। अनाज और फल भाजी के उत्पादन में काफी वृद्धि होती है।

उपर्युक्त विषमुक्त खेती में खर्च कम होता है। आय में वृद्धि होती है। रासायनिक खेती में खर्च अधिक होता है। अन्न उत्पादन कुछ अधिक होता है।

नैसर्गिक खेती से प्राप्त अन्न, फल, भाजी, दूध में पोषक तत्व अधिक होते है। आर्य समाज (१८७५) के संस्थापक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने 'सत्यार्थप्रकाश' ग्रन्थ में गोवंश द्वारा आहार समस्या के निराकरण का यथार्थ चित्र उपस्थित किया है। स्वामीजी ने इसी विषय पर स्वतन्त्ररूप से 'गोकरूणानिधि' पुस्तक की रचना की है। देखिए वे क्या लिखते हैं–

जो एक गाय न्यून से न्यून दो सेर दूध देती है और दूसरी वीस (२०) सेर तो प्रत्येक गाय के ग्यारह से दूध होने में कोई शंका नहीं। इस हिसाब से एक मास में सवा आठ मन दूध होता है। एक गाय कमसे कम छह महीने और दूसरी, अधिक से अधिक १८ महीने तक दूध देती है। दोनों का मध्यभाग प्रत्येक गाय के दूध देने में १२ महीने होते हैं। इस हिसाब से १२ महीने का दूध निन्नानबे मन होता है। इतने दूध को औटाकर प्रंतिसर में एक छटाँक चावल और डेढ़ छटाँक चीनी डालकर खीर बनाकर खावे तो प्रत्येक पुरुष के लिए दो सेर की खीर पुष्कल होती है। क्यों कि यह भी एक मध्यभाग की गिनती है अर्थात् कोई दो सेर के दूध की खीर से अधिक खीर खा गया और कोई न्यून। इस हिसाब से एक प्रसूता गाय के दूध से १९८० एकहजार नौ सो अस्सी मनुष्य एक बार तृप्त होते हैं।

गाय न्यून से न्यून ८ और अधिक से अधिक १८ बार व्याती है। इसका मध्य भाग तेरह बार आया तो २५७४० पच्चीस हजार सात सौ चालीस, मनुष्य एक गाय के जन्म भर के दूधमात्रा से एकबार तृप्त हो सकते है। इस गाय की एक पीढ़ी में छह बछि या और ७ बछड़े हुए। इनमें से एककी मृत्यु रोगादि से होना सम्भव है तो बारह रहे। इन बछियाओं के दूध मात्र से १५४४४० एक लाख चौवन हजार चार सौ चालीस मनुष्यों का पालन हो सकता है। अब रहे छह बैल। इनमें से एक जोड़ीसे दोनों साख में २०० मन अन्न उत्पन्न हो सकता है। इस प्रकार तीन जोड़ी ६०० सौ मन अन्न उत्पन्न कर सकती है। उनके कार्य का मध्यभाग ८ आठ वर्ष है। इस हिसाब से ४८०० चार हजार आठ सौ मन अन्न उत्पन्न करने की शक्ति एक जन्म में तीनों जोड़ी की है। ४८०० मन से प्रत्येक मनुष्य का तीन पाव अन्न भोजन में गिनें तो २५६००० दो लाख छप्पन हजार मनुष्यों का एक बार का भोजन होता है। दूध और अन्न को मिलाकर देखने से निश्चय है कि ४१०४४० चार लाख दस हजार चार सौ चालीस मनुष्यों का पालन एकबार के भोजन में होता है।

अब छह गाय की पीढ़ी पर पीढ़ियों का हिसाब लगाकर देखा जाय तो असंख्य मनुष्यों का पालन हो सकता है। और इसके मांस से अनुमान है कि केवल अस्सी (८०) मांसाहारी मनुष्य एक बार तृप्त हो सकते हैं।''– 'गोकरूणा निधि''

बढती हुई जन संख्या के आहार का प्रश्न कहां रहा? गोबर (और मैंस) आहार समस्या के लिए धरती के उपर एक धरती हैं। यह गोवंशरूपी थाली भूमि की तरह ही आहार का अक्षय स्रोत है।

शून्य बजट की विषमुक्त नैसर्गिक खेती पशुऊर्जा से ही संभव है। गायबैल और भैंस की हत्या जबतक कसाई घरों बन्द नहीं होती तब तक यह संभव नहीं है।

बीजेपी की महाराष्ट्र सरकार ने गोवंश रक्षा विधेयक पर राष्ट्रपति के हस्ताक्षर करवा लिये हैं। अब महाराष्ट्र में गोवंश हत्या नहीं हो सकती। सरकार लाखलाख शुभकामनाओं की पात्र है।

गोवंश की हत्या बन्द करने के लिए केन्द्रीय कानून बनना चाहिए।

– जगदेवसिंह ठाकुर

(गोरक्षा सत्याग्रह शिबिर, घाटकोपर का ३३ वर्षो से कार्यकर्ता। सत्याग्रह की पत्रिका 'शान्ति सेवक' के संपादक

गोरक्षा सत्याग्रह शिबिर,
सर्वोदयतीर्थ (हास्पिटल), ला.ब. शा. मार्ग,
घाटकोपर (प.), मुंबई – ४०० ०८६.

आवश्यकता

आर्य समाज सान्ताक्रुज में विद्वान / प्रचारक / पुरोहित की आवश्यकता

आर्य जगत् में अपना एक विशेष स्थान रखने वाली आर्य समाज सान्ताक्रुज को अपनी धार्मिक गतिविधियों के विस्तार हेतु सद् गृहस्थ विद्वान / प्रचारक / पुरोहित की आवश्यकता है।

वेद प्रचार के पुनीत कार्य में अपनी सेवाएं देने के इच्छुक महानुभावों से निवेदन है कि नीचे लिखे पते पर सपर्क करें। मिशनरी भावना के महानुभाओं को प्राथमिकता दी जायेगी।

महामंत्री– आर्य समाज सान्ताक्रुज
लिंकिंग रोड, सान्ताक्रुज (वेस्ट)
- मुम्बई ४०००५४ फोन : २६६० २८००
Email :aryasamajsantacruz@hotmail.com

thearyasamaj.org

विचार शक्ति का चमत्कार

यह विषय काफी समय से चर्चा में रहता आया है कि क्यों अन्य आध्यात्मिक संस्थाओ में लाखों की भीड़ देखी जाती है परन्तु आर्य समाज में उसके अपेक्षा बहुत कम उपस्थिति होती है। लेकिन मैंने हमेशा सकारात्मक पहलु पर विचार किया है और पाया कि आर्य समाज के कार्यक्रमों में भी उपस्थिति पहले की अपेक्षा बढ़ती जा रही है। अगर ऐसा नहीं होता तो मुम्बई, सिंगापुर, ओस्ट्रेलिया, मोरिशस में अन्तर्राष्ट्रीय महा सम्मेलनो में दूनिया भर से लोग पहुँचते हैं। यूँ तो कमीयाँ हर संस्था में मिलेगी, लेकिन चूकि आर्य समाज वेदों पर आधारित संस्था है और हमने अच्छाईयों का जामा पहना हुआ है, इसिलिए अपेक्षाकृत आर्य समाज को एक अलग तरीके से देखा जाता है। लेकिन हमें फिर भी इस बात पर विचार करना है कि आर्य समाजो में उपस्थिति क्यों कम होती है तो निम्नलिखित पहलु सामने आते हैं।

१) हमारी कथनी और करनी में बहुत अंतर है।

मंच पर से कि गयी घोषणाओं का व्यवहारिक जीवन में उतारने का अवसर आता है तो हम निष्फल हो जाते हैं। ज्यादातर लोग पौराणिकता को भी आपनाए हुए हैं, जिसका दूसरों पर विपरीत असर होता है। क्रोध, अहंकार, ईर्ष्या हमारे सर चढ़कर बोलती हैं।

२) आर्य समाज एक विचारधारा है, संगठन है, क्रान्ति है, इसमें मूर्तिपूजा व गुरूडम का आकर्षण नहीं है।

३) हमे हमेशा अपनी अच्छाईयाँ सामने रखनी चाहिए, जिससे सामने वाला व्यक्ति अपने आप समझेगा कि क्या गलत हैं और क्या सही। बजाए इसके हम खण्डन-मण्डन के चक्कर में पड़कर एक विरोधी पक्ष तैयार कर लेते हैं।

४) हम सपने नहीं बेचते। हमारे यहां एसा कोई रस्ता नहीं है जिससे किये हुए कर्मो के फल से योग, ध्यान व मंत्र जाप या उपायों से छुटकारा पाया जा सकता है। लोग सुख ढूंढने के सरल रस्ते ढूंढते हैं जो कि यहां पर नहीं है।

५) हमारी राहें कठिन है, उदाहरण के रुप में यदि कार्मकाण्ड को लें तो दैनिक यज्ञ यदि ऋषि प्रणित विधि से किया जाये तो बम्बई जैसे व्यस्त शहर में आधे से ज्यादा लोग हवन करना छोड़ देंगे, क्योंकि इसके नियम बहुत कठिन हैं, जैसे पेन्ट-शर्ट नहीं पहना, बेल्ट नहीं लगानी, टिका नहीं लगाना, तालियां नहीं बजानी, यज्ञ मं बैठकर अभिवादन नहीं करना इत्यादि। उसमें भी आपसमें विचारों का टकराव होना आग में घी ड़ालने का काम करता है।

इतना सब होने के बावजूद हमें अपने आप को धन्य मानना चाहिए कि हम आर्य समाज जैसी संस्था से जुड़े हैं। व्यक्तिगत रूप से आर्य समाज मुझे विरासत में मिला है, जिसके लिए मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ।

वेदो पर आधारीत एवं ऋषि द्वारा स्थापित आर्य समाज के पथ पर यदि हम थोडा भी चल सके तो हमारा जीवन धन्य समझा जाएगा। आप सभी का बहुत धन्यवाद- शेष अगले अंक में एक ओर विचार के साथ।

- राजकुमार भगवती प्रसाद गुप्त
- मंत्री, आर्य समाज वाशी

लेना-देना

लेना चाहते हो तो आशीर्वाद लो ।
देना चाहते हो तो अभय दान दो ।।
बोलना चाहते हो तो मीठे वचन बोलो।
तोलना चाहते हो तो अपनी वाणी को तोलो ।।
पढना चाहते हो तो महापुरुषों की जीवनी पढो।
चलना चाहते हो तो सतमार्ग पर चलो ।।
जानना चाहते हो तो परमेश्वर को जानो।
जीतना चाहते हो तो तृष्णाओं को जीतो।।
पीना चाहते हो तो ईश्वर चिन्तन का सर्बत पियो।
पहनना चाहते हो तो नेकी का जामा पहनो ।।
खाना चाहते हो तो क्रोध और गम खाओ।
मारना चाहते हो तो बुरे विचारों को मारो।।
करना चाहते हो तो दीन-दुखिया की सेवा करो ।
छोडना चाहते हो तो झूठ को छोडो।।
देखना चाहते हो तो अपने अवगुणों को देखो।
सुनना चाहते हो तो दुखियों की पुकार सुनो।।
पहचानना चाहते हो तो स्वयं को पहचानो।

बिटिया

बेटा वारीस है,	तो	बेटी पारस है।
बेटा वंश है,	तो	बेटी अंश है।
बेटा आन है,	तो	बेटी शान है।
बेटा तन है,	तो	बेटी मन है।
बेटा मान है,	तो	बेटी गुमान है।
बेटा संस्कार है,	तो	बेटी संस्कृति है।
बेटा दवा है,	तो	बेटी दुआ है।
बेटा भाग्य है,	तो	बेटी विधाता है।
बेटा शब्द है,	तो	बेटी अर्थ है।
बेटा गीत है,	तो	बेटी संगीत है।

धर्म के दस लक्षण

धृति	क्षमा
दम	अस्तेय
शौच	इन्द्रिय निग्रह
धो, विद्या	सत्य, अक्रोध

वाणी के दोष

कटु बोलना   कठोर बोलना
झूठ - चुगली बोलना, अधिक बोलना
निन्दा करना ।

सौजन्य- दोशीजी मोरबी

thearyasamaj.org

भारतीय महीनों के नाम और उनका औचित्य

देवेन्द्र प्रसाद शास्त्री 'सावित्रेय' रांची-१

भारतीय महीनों के नाम कैसे पड़े? उन महीनो में मानव के लिए क्या सन्देश है? इसका रहस्य वेद और वेदांग (ज्योतिषशास्त्र) के आधार पर समझा जा सकता है। अथर्ववेद में अट्ठाईस (२८) नक्षत्रों का वर्णन किया गया है, परन्तु ज्योतिषशास्त्र 'अभिजीत' नक्षत्र को छोड़कर सताईस नक्षत्रों को स्वीकार करता है। हरिवंश पुराण में 'अभिजीत' नक्षत्र में ही योगेश्वर भगवान श्रीकृष्णचन्द्र जी का भूमण्डल पर प्रादूर्भूत माना है। ज्योतिषशास्त्र में (२७) सताईस नक्षत्र अश्वनी, भरणी, चित्रा, विशाखादि का वर्णन है। सभी ग्रह, उपग्रह और नक्षत्र गतिशील है। कुछ ग्रह और उपग्रह अपनी धुरी पर नाचते रहते है तो कुछ दूसरे ग्रहों के चक्कर काटते रहते हैं। जैसे जगत की आत्मा सूर्य अपने ही केन्द्र पर धूम रहा है। पृथ्वी सूर्य के चारों और नाच रही है। चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। जब चन्द्रमा घूमते-घूमते किसी खास-नक्षत्र में आ जाता है, तब उसी नक्षत्र के नाम पर उस मास का नाम रखा गया है। उदाहरणार्थ जब चन्द्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए 'चित्रा' नक्षत्र में आ जाता हे तब उस समय चैत्र माह की पूर्णिमा होती है, इसलिए उस मास को 'चैत्र' कहा गया। उसी प्रकार 'विशाखा' नक्षत्र में 'वैशाख' तथा 'ज्येष्ठा' नक्षत्र में 'जेठ' माह की पूर्णिमा होती है। 'श्रवणा' नक्षत्र में 'श्रावण' (सावन) और 'भद्रा' में 'भादो' आदि की पूर्णिमा होती है।

इस सत्य का उद्घाटन भास्कराचार्य ने किया था। जिस समय भारत में वेदों का शान रूपी-प्रकाश फैल चुका था, उस समय विश्व के अन्य देश अज्ञान के अन्धकार में डूबे हुए थे। उस समय वेदों ने संवत्सर, अघन मास, पक्षादि की सीमा बांध दी थी।

उन सब में खास नाम दिये गये हैं। भारतीय महर्षियों ने अनेक रहस्यों का समय-समय पर साक्षात्कार किया। अजुर्वेद में बारह महीनों के नाम का जिक्र हुआ है। वेद में वर्णित मासों के नाम की वैदिक-मास और लोक में प्रचलित मासों के नाम की लौकिक नाम कहे जाते है। भारत में प्रचलित महीनों के नाम प्रसिद्ध ज्योतिषविद-भास्कराचार्य के दिए हुए है। सभी महीनों के शब्दार्थो पर विचारने से मुझे ऐसा ज्ञात होता है कि इनमें अध्यात्म का जिक्र हुआ है। ये महीने मानव को दैवी स्वरूप की और बढ़ने का सुरूचिपूर्ण ढंग से वर्णन करता है। उसे महामानव बनाने की जीवन चर्या निर्धारित करते है। बारह महीनों की द्वादश आदित्यदेव' कहा गया है, क्योंकि ये ही अदितिरूप परमात्मा के पुत्र हैं, प्रतिदिन उदय होकर दिव्य सन्देश को बिसेरते जा रहे है :-

''हे मानव। समय रहते हुए जागो ! जीवात्मा के दैवी-स्वरूप की ओर भी बढ़ो।''

वेद में 'चैत' मास को 'मधूमास' कहते है। 'चैत' शब्द स्रष्टा के उस संकल्प का परिचायक है, जिसके द्वारा परमात्मा अपने को अनेक रूपों में प्रकट करता है। जड़ ओर त्रिगुणात्मक प्रकृति की साम्यावस्था में चेतना (क्षोम) का संचार करता है। इस में माधुर्य का संचार कर देता है जिससे सम्पूर्ण सृष्टि आनन्द विभोर हो जाती है ओर सर्वत्र-

''मूकं करोति वाचलं पगुं लङ्धयते गिरिं।

यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दं माधवं।।

की ध्वनि मुखरित हो जाती है। सभी गतिमान हो उठते हैं। 'वैशाख' को 'माधव' मास कहा जाता है। 'वैशाख' शब्द का अर्थ है:-

'शाखाओं को फैलाना अर्थात ब्रह्म अपने प्रकाशन (मैनिफिसटेशन) की शाखाओं का विस्तार और विकास करते हुए मानव को उपदेश देता है कि तुम भी अपने अन्दर में मेरी उस ज्योति का विस्तार कर विकास मार्ग का दृढ़ संकल्पी बनो।' जग स्रष्टा का संकल्प शुद्ध और परम-पवित्र कहा गया है, इसलिए वह सिद्धों का सिद्ध है।

वह संकल्प-बल से जैसा चाहता है, वैसा ही होता है। यदि मानव भी तदध्त् शुद्ध शिवसंकल्पी हो जाय तो वह भी प्रभुकृपा से ज्ञान-विज्ञान का प्रकाशक ओर सिद्धपुरुष की कोटि में चला जाता है। उसी स्रष्टा का प्रकाश सर्वत्र छाया हुआ है, उसी के प्रकाश से सभी सासारिक वस्तुयें प्रकाशित हो रही हैं। 'तस्य भासा सर्वमिदं विभाति।' यही चराचर सृष्टि के कण-कण में रम रहे है। इसीलिए श्री वासुदेव कह कर प्रार्थना की जाती है:-

''वासनाद् वासुदेवोऽसि वासित ते जगत्रयं। सर्वभूत निवासोऽसि वासुदेव नर्मोस्तुते।।'

ऋ० परिशिष्ट०

उसे जानने के लिए मनुष्य को ज्येष्ठ बनने की जरूरत पड़ती है। 'ज्येष्ठ' का अर्थ ही है बड़ा और महान्। यह बहुत्व के कारण होने वाले परिणामो का भी द्योतक है। परमात्मा ही सबसे बड़ा और महान् पालक है, उसे अथर्ववेद में 'तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः' कह करके नमस्कार किया गया है। बड़ा बनने का उपदेश 'जेठ' माह देता है। मनुष्यों मे अधिकार, सुविधा, श्रेष्ठता तथा बड़प्पन प्राप्त करने के लिये संघर्ष और युद्ध होता है। इसलिए वह असह्य दुःखो से घिर जाता है। इसे आध्यात्मिक भाषा में 'आषाढ़' कहते है। 'आषाढ' का अर्थ ही है:-

'चारों और के होने वाले असह्य दुःख।' जब मनुष्य उस दुखावस्था में पहुँच जाता है, तब वह उस दुःख के कारण को ढूंढ़ने का प्रयास करता है; उससे छुटकारा पाने के लिए मनन करता है और मनन के द्वारा सारी कठिनाईयॉ और सन्देहो को दूर करने के लिये प्रभु कृपा से दृढ़ निश्चयी बनता है। पदार्थो के पीछे छूपे हुए सत्य को खोजने का प्रयास भी करता है। दृढ़ निश्चयों और शिव संकल्पों व्यक्ति को गुरु से सदुपदेश श्रवण करने के लिए व्याकुल हो उठते हैं।

(क्रमश ......)

thearyasamaj.org

कर्म एक तप है

डॉ. बलदेव सहाय

केनोपनिषद् वस्तुत: सामवेद का भाग है, इसे जैमिनी ब्राह्मण भी कहते हैं। यह बहुत छोटा, केवल चार खण्ड का है, पर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपनिषद् है। पहले खण्ड में शिष्य ने गुरु से प्रश्न किया कि वह कौन है जिसकी प्रेरणा से मन मानो विषयों पर टूटा पड़ता है, आँखें देखती हैं, कान सुनते हैं इत्यादि। इसके उत्तर में गुरु ने बड़ा रहस्यमय उत्तर दिया और बताया कि साधारणतया लोग जिसकी उपासना करते हैं और उससे तरह-तरह के वरदान माँगते हैं, वह ब्रह्म नहीं है। जिसे हम जानते हैं, और जिसको हम नहीं जानते हैं, वह भी ब्रह्म नहीं है। विश्व की जो आधारभूत संचालक शक्ति है वह ब्रह्म है। यों समझें कि इन्द्रियाँ अपने-अपने विषयों की सूचना मन को पहुँचाती हैं, पर इन्द्रियाँ और मन तो जड़ हैं, वे इस सूचना को शरीर के, जगत के, नियंता को देते हैं, आत्मा फिर उस सूचना को वापस लौटा देता है, तब हमें संसार की जानकारी होती है। आत्मा जैसे राजा है, जब वह सूचना पर अपनी मोहर लगाकर मन-रूपी प्रधानमंत्री को देता है तभी हम जगत-व्यापार को समक्ष पाते हैं। वह आत्मा जीव में होती है तो जीवात्मा कहलाती है और जब सृष्टि में रहती है तो ब्रह्म कही जाती है। उसी के प्रकाश में सब-कुछ हो रहा है, अन्यथा सब जड़ है, शून्य है।

एक जाननेवाला होता है, दूसरा जो जाना जाता है, तीसरी जानने की क्रिया। इसी तरह एक द्रष्टा होता है, दूसरा दृश्य और तीसरी देखने की क्रिया आदि। जब तीनों का अन्तर मिट जाता है, यह त्रिपुटी एक हो जाती है, तीनों का भेद समाप्त हो जाता है, कोई कोलाहल नहीं रहता, केवल एक मूक, शान्त, परम प्रज्ञा व्याप्त रहती है, तब ब्रह्म का आभास होता है। वह केवल एक चेतना है, ऐसी चेतना जहाँ इस चेतना के अतिरिक्त और कोई अन्य चेतना नहीं होती। यदि हमें भिन्नता का भान रहता है, वृत्तियाँ उदय-विलय होती हैं, विचार आते हैं और जाते हैं तो अखण्डता, अनन्तता, असीमता, सर्वज्ञता तो रही नहीं और न आत्मज्ञान अनुभव हुआ। ऋषि कहते हैं- जो यह कहता है कि उसको नहीं जान सका, उसने 'उसे' जान लिया है; जो यह समझता है कि उसने 'उसे' जान लिया है वह उसको नहीं जानता।

यस्यामतं तस्य मतं, मतं न वेद स:।
अविज्ञातं विजानतां विज्ञातमविजानताम् ।। *(II-3)*

जो यह कहता है कि वह उसको नहीं जानता वह कम से कम यह भूल तो नहीं करता कि जो कुछ उसने जाना है, समझा है वह ब्रह्म नहीं है, क्योंकि परम शान्ति, परमानन्द, बुद्धि-विलास का विषय है ही नहीं। न तो वह इन्द्रियों द्वारा जाना जा सकता है और न मन द्वारा। 'वह' दोनों की पकड़ के परे की सत्ता है, और वह उसको अन्त:प्रज्ञा द्वारा जानने का प्रयास जारी रखेगा। जो 'उस' को जान गया है वह यह कहेगा नहीं कि 'मैं उसको जानता हूँ।' वह तो जीवनमुक्त अवस्था को पहुँच गया और उसके लक्षणों से, उसके व्यवहार से ही हम यह अनुमान लगा सकते हैं- वह इन्द्रिय-विषयों की ओर आँख उठाकर नहीं देखेगा, उनमें उसको कोई रस नहीं आएगा। जिसने अमृतपान किया हो वह गन्ने के रस की ओर क्यों लालायित होगा! उसके लिए अब न कुछ पाना है न खोना है, वह हर हाल में स्थितप्रज्ञ रहेगा। जीवनयापन के लिए जो मिल जाए वह ठीक है, क्योंकि ऐसे भाग्यवान का योगक्षेम वहन करने का भगवान् ने आश्वासन दिया हुआ है उसके सामने न तो मान-मर्यादा को कोई महत्त्व है और न उसे तिरस्कार-अनादर से कोई खिन्नता होती है। स्थितप्रज्ञ की भगवान् कृष्ण ने गीता में बड़ी सुन्दर व्याख्या की है।

जिसने सच्चे ज्ञान का थोड़ा भी स्वाद ले लिया है उसकी एक और पहचान है- वह अपने और 'दूसरों' में कोई अन्तर नहीं समझता, सर्वत्र एक ही आत्मा के दर्शन करता है। **स्वामी रामकृष्ण परमहंस** की जीवनी में **कृस्टाफर ईशरवुड** लिखते हैं कि एक बार उनके परमभक्त माथुर महाशय उनको उत्तरी-पश्चिमी भारत के तीर्थों की यात्रा पर ले गए। देवगढ़ शिवमन्दिर के गाँव में दीन-दुखियों की हालत देख परमहंस जी द्रवित हो उठे। माथुर से बोले: ''तू कम से कम इन सबको एक समय भोजन करा दे और उनको एक-एक वस्त्र दे दे।'' माथुर आना-कानी करने लगे तो रामकृष्ण जी ने ताड़ना दी: ''तू तीर्थयात्रा पर जा, मैं तो इन्हीं के बीच रहकर इनके सुख-दु:ख में शरीक होऊँगा।'' माथुर ने तुरन्त उनके आदेश का पालन किया। परमहंस जी ने सबके साथ अत्यन्त अन्तरंग सान्निध्य स्थापित कर लिया था। एक बार वह दाक्षिणेश्वर मन्दिर की छत पर खड़े गंगा का दृश्य देख रहे थे। एक माँझी नाव चला रहा था, तभी न जाने किस बात पर उसका स्वामी माँझी को बेंत से मारने लगा। यह देखकर परमहंस जी कराहने लगे और नीचे उतर आए। उनके शिष्यों ने देखा उनकी पीठ पर बेंत की मार के निशान पड़े हुए थे।

भगवान् कृष्ण **गीता** में कहते हैं: वह चराचर सब भूतों के बाहर-भीतर परिपूर्ण है और चर-अचर भी वही है। वह इतना सूक्ष्म है, इतना सूक्ष्म है कि अविज्ञेय है, जाना नहीं जा सकता, अतिदूर और समीप भी वही है-

बहिरन्तश्च भूतानामचरं चरमेव च।
सूक्ष्मत्वात्तदविज्ञेयं दूरस्थ चान्तिके च तत्।। *(XIII-15)*

इसकी व्याख्या करते हुए स्वामी शिवानन्द कहते हैं कि ''उस जैसा कोई दूसरा नहीं है। वह इन्द्रियों द्वारा नहीं जाना जा सकता, और मन की पकड़ से भी परे है। वह अकर्ता है, अदृश्य है, पर सबका द्रष्टा है।'' स्वामी रामसुखदास ने और भी बारीक बात कही है, उनका मत है कि वह 'सत्' भी नहीं कहा जा सकता। जैसे दिन की चर्चा रात की तुलना में की जाती है, उसी तरह 'सत्' भी 'असत्' की सापेक्षता में ही कहा जा सकता है; पर 'असत्' तो कुछ है नहीं, केवल एक 'सत्' का ही सर्वत्र साम्राज्य है। अत: ऋषियों-मुनियों तथा सन्त-समाज ने, जिन्होंने उसको जान लिया है, अनुभूति पर उतारा है, वे विभिन्न युक्तियों द्वारा हमें ब्रह्म का परिचय देने का प्रयत्न करते हैं। हमें विश्वास है कि इतने विशद विवेचन के बाद हमें अवश्य ही 'उस' का आधार हो ही गया होगा। इस संदिग्ध आधार पर, पुरुषार्थ द्वारा हम 'उस'

(शेष पृष्ठ ११ पर)

thearyasamaj.org

सन्ध्या-एक चिंतन

देवनारायण भारद्वाज

वैदिक जीवन पद्धति में पञ्च महायज्ञों का पालन अनिवार्य है। उनमें से सर्वप्रथम महायज्ञ को ब्रह्मयज्ञ कहते हैं। यज्ञ आयोजन में अग्नि, समिधा और हवि की आवश्यकता होती है। हृदय रूपी समिधा में प्रज्वलित अग्नि परम ब्रह्म रूपी अग्नि में आत्मा रूपी हवि की आहुति-अर्पण ही ब्रह्म यज्ञ है। इसी प्रकार शास्त्र रूपी समिधा से प्रकट शब्द ब्रह्म रूपी अग्नि में बुद्धि रूपी हवि की आहुति अर्पण भी ब्रह्म यज्ञ है। अर्थात् शब्द ब्रह्म को पकड़ कर परम ब्रह्म तक पहुँचने की सारी प्रणाली ब्रह्म यज्ञ है। अधिक स्पष्टता की दृष्टि से कहा जा सकता है कि स्वाध्याय और सन्ध्या दोनों ही ब्रह्म यज्ञ के अन्तर्गत आते हैं। सन्ध्या शब्द किन्हीं दो वस्तुओं में सन्धि या एकाता होना भी इंगित करता है। पुस्तकों के शब्दों में संचित ज्ञान राशि से हमारी बुद्धि की सन्धि होना जहाँ एक ओर स्वाध्याय है, वहीं समस्त ज्ञान के स्रोत परम-पिता परमात्मा से आत्मा की सन्धि होना सन्ध्या कहलाता है। सन्ध्या कब होती है, जब दिन चलते-चलते रात्रि के समीप आ जाता है, उससे मिलने लगता है-वे ही मनोरम क्षण सन्ध्या कहलाते हैं। इसी प्रकार जब रात्रि बढ़ते-बढ़ते दिवस की ओर पहुँचने लगती है, इसी मिलन को सन्ध्या कहते हैं।

सायंकालीन सन्ध्या-सन्ध्या ही रह जाती है, क्योंकि उसके उपरान्त अंधेरा घिरने लगता है, जबकि प्रात:कालीत सन्ध्या को एक दूसरा चमकता नाम मिल जाता है, उषा, क्योंकि अंधकार सिमट कर प्रकाश के लिए मार्ग प्रशस्त कर देता है। इन दोनों ही अवसरों पर लगभग एक समान ही मनोहारी रमणीक दृश्य दिखाई देने लगते हैं। सूर्योदय के समय जो दिनकर अपनी अरुणिम आभा से प्रकट होता है, सूर्यास्त के समय भी वह अरुणिम आभा के साथ ही विदाई लेता है। दोनों ही समय की अरुणिम-तरंगे सम्पूर्ण प्रकृति को जहाँ सौन्दर्य प्रदान कर देती हैं, वहीं उसे शान्ति सौम्यता का वरदान भी दे देती हैं, प्रकृति ही क्या प्राणिमात्र-मानव, पशु-पक्षी, वृक्ष-वनस्पति सभी अपने अंतस्तल में विश्रान्ति और शान्ति का अनुभव करते हैं। इसीलिए यह सन्धिकाल आत्मा के परमात्मा में विलय के लिए, आत्म-परमात्म मिलन के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होता है। मानव के हृदय स्थल में परमात्मा आत्मा सदैव मिले रहते हैं, प्रत्युत परमात्मा की गोद में आत्मा, अथवा आत्मा के सूक्ष्म कलेवर में परमात्मा के अति सूक्ष्म अस्तित्व का प्रकाश होता है। आवश्यकता इस मिलन की अनुभूति की है। इसी अनुभूति का माध्यम सन्ध्या है।

'सन्ध्या' अपने शब्दिक परिवेश में ''सम्यक ध्यान'' की ओर संकेत करती है। अपने हृदय में स्थित आत्मा में सन्निविष्ट परमात्मा का ध्यान करना ही सन्ध्या है। अपने शरीर के अंग-प्रत्यंग का ध्यान, सृष्टि के अंग-उपांग का ध्यान, प्राणिमात्र के संग एवं ढंग का ध्यान करते हुए, अपने सम्पूर्ण ध्यान को इन सबके निर्माता विधाता प्रभु पर केन्द्रित करना ही सम्यक् ध्यान है। कोई भी आस्तिक मानव ज्ञान, कर्म और उपासना की त्रिक के बिना नहीं रह सकता है। उसे यह तीनों किसी न किसी रूप में करने ही पड़ते हैं। आत्मा की सन्धि ज्ञान से हो जाये, ज्ञान की सन्धि कर्म से हो जाये, ज्ञान कर्म मिलकर उग्र उदण्ड न हो जायें, इसलिए इनकी सन्धि भी उपासना से हो जाये-यही तो सन्ध्या है। स्वाध्याय केवल अध्ययन मात्र न रह जाये, पुस्तकीय ज्ञान मात्र न रहा जाये। इसमें 'स्व' का अध्ययन भी हो। यह 'स्व' जो सृष्टि से लेता है, केवल लेता ही नहीं, देता भी है सृष्टि को, यह 'स्व' की सृष्टि-समाज से सन्धि और 'स्व' की सर्वस्व प्रभु से सन्धि ही तो सही रूप में सन्ध्या है।

सृष्टि में 'सर्व' है, किन्तु उसमें तेजस्व कहाँ है? 'तेजस्व' तो 'सर्वस्व' में ही है। इसी 'सर्व' के सहारे से 'स्व' का 'सर्वस्व' में विलीनीकरण ही सन्ध्या है। सर्वस्व में ही तेजस्व है, तेजस्व में ही वर्चस्व है, यही तेज एवं वर्चस्व का कृतित्व में ढल जाना ही सन्ध्या का सुफल है। सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में हमें ऐसी ही दिशा दृष्टि मिलती है।

यन्मनसा ध्यायति तद्वाचा वदति,

यद्वाचा वदति तत् कर्मणा करोति,

यत् कर्मणा करोति तदभिसम्पद्यते।।

जीव जिसका मन से ध्यान करता है, उसको वाणी से बोलता है, जिसको वाणी से बोलता है, उसको कर्म से करता, जिसको कर्म से करता उसी को प्राप्त होता है। ''सत्यं ज्ञानमनन्त ब्रह्म'' यह तैत्तिरीयोपनिषद का वचन है। जो पदार्थ हैं उनको सत कहते हैं, उनमें साधु होने से परमेश्वर का नाम 'सत्य' है। जो जानने वाला है, इससे परमेश्वर का नाम ज्ञान है। जिसका अन्त अवधि मर्यादा अर्थात् इतना लम्बा, चौड़ा, छोटा-बड़ा है, ऐसा परिमाण नहीं है, इसलिए परमेश्वर के नाम सत्, ज्ञान और अनन्त है। यही ब्रह्म है और इसी से आत्मा का मिलन सन्ध्या है। लोहा अग्नि में पड़कर न केवल रंग-रूप में अग्नि सदृश हो जाता है, प्रत्युत उसमें अग्नि की ऊष्मा एवं ऊष्णता भी तो आ जाती है। यह लौह पुरुष उस अग्नि पुरुष से मिल कर ऐसी ही एक रूपता स्थापित कर लेता है।

यदग्ने स्यामहं त्वं, त्वं वा घा स्या अहम्।

स्पुष्टे सत्या इहा शिषः ।। ऋ. ८.४४.२३

हे (अग्ने) प्रकाश स्वरूप (यत् अहम् त्व स्याम्) जब मैं तू हो जाऊँ (वा घ) अथवा (त्वं अहं स्या:) तू मैं हो जाये तो (ते इह आशिष:) तेरे इस संसर के सब आशीर्वाद (सत्या: स्यु:) सत्य सफल हो जायें।

स्वयं अध्यनन करना ही स्वाध्याय है। इन्द्रिय संयम, चित्त की एकाग्रता बुद्धि-वृद्धि, लोकोपकार तथा यश प्राप्ति आदि जीवन की

thearyasamaj.org

सफलता के सभी सूत्र इस स्वाध्याय से जुड़ जाते हैं। सूर्य का गमनागमन, चन्द्रमा का अनुक्रमण, नक्षत्रों का परिक्रमण, सरिताओं का प्रवहन जिस प्रकार नित्य नियमित चलता है उसी प्रकार स्वाध्याय नित्य, नियमित, निश्चित रूपेण चलना चाहिए। इसके लिए कोई एक सद्ग्रन्थ ही नहीं, उसके एक शब्द का चिंतन भी कम नहीं है। स्वाध्याय से भव और शर्व दोनों की समझ आती है। अपने 'स्व' को दोनों की ही आवश्यकता है।

नम: सायं नम: प्रातर्नमो रात्र्या नमो दिवा।

भवाय च शर्वाय चोभाभ्यामकरं नम:।।

अथर्व : ११.२.१३

सायंकाल, प्रात:काल को सन्ध्या, स्वाध्याय से, और रात्रि-दिन में इसके उपयोग से शर्व-दु:ख नाशक प्रभु और भव-सुखदायक सृष्टि दोनों का हम सम्पादन करते हैं। पहले जो 'सर्वस्व' का सर्व था-वह अब शर्व के रूप में मुखर हो उठा है। भव और सर्व (शर्व) दोनों मिलकर तो २४ घंटे चिंतन का विषय हो सकते हैं, किन्तु कोई एक नहीं और शर्व तो बिल्कुल नहीं। जैसे प्रात: सायं थोड़ी-थोड़ी देर के लिए हम आहार करते हैं, किन्तु उसका शरीर के लिए उपकार और समाज के लिए व्यवहार शेष समस्त समय के लिए चलता है, किन्तु हम निरन्तर २ घंटे खाते ही रहें तो वह हमारे लिए संहार बन जाता है। स्वाध्याय सन्ध्या का अल्पकालिक चिंतन-मनन-ध्यान सम्पूर्ण रात्रि-दिवस के आचार-व्यवहार का आधार बना रहता है, यदि हम उसे प्रयोग में न लाकर केवल चिंतन ही करते रहें, तो यह भी हमारे लिए संहार का कारण बन सकता है। सन्ध्या-स्वाध्याय के इस ब्रह्मयज्ञ की तैयारी ब्रह्मचर्य के साथ ब्रह्म मुहूर्त में करनी इसलिए आवश्यक है, क्योंकि ब्रह्म में विचरण के लिए शरीर को संयमित रखते हुए सूर्य के निकल आने पर हमें शर्व से भव के भण्डार की पालना भी तो करनी है। इस प्रकार समय न होने की कोई समस्या ही शेष नहीं रह सकेगी।

हम सन्ध्या से सम्यक् रूपेण ध्यान लगाने चले हैं, फिर कोई बाधा भी नहीं आनी चाहिए। यही एक बाधा क्या कम है, जो हमारे शिर के केश बिखर रहे हैं, तथा शिखर पर स्थित शिखा भी उछल कूद कर रही है। हमारी एक शिखा के मूल में सैकड़ों बाल जुड़े रहते हैं, यह सभी तो हमारे, विचारों एवं भावनाओं के प्रतीक हैं, यदि यही विचार अव्यवस्थित रहे तो हमारा सम्यक् ध्यान कहाँ सम्भव है। इसलिए गुरुमंत्र गायत्री पढ़कर इन शिखा की शिखाओं को ग्रन्थित कर दो। शिर-शिखा के बाल गुँथ जाने पर जहाँ एक ओर व्यवस्था एवं सुन्दरता हमें प्रदान कर देते हैं, वहीं दूसरी ओर आन्तरिक शान्ति सम्पन्नता की ओर बढ़ने का संकेत भी हमें देते हैं। जिसके खल्वाट शिर पर इन बालों का बबाल नहीं है, उसे फिर ऊपर की क्या चिंता, पर आन्तरिक विचार बंधन तो उसके लिए भी आवश्यक है।

(सन्ध्या पथ से साभार)

पृष्ठ ८ पर से चालू....

को अनुभव करने का प्रयास-भर तो कर ही सकते हैं।

केनोपनिषद् के तृतीय तथा चतुर्थ खण्डों में एक उपाख्यान द्वारा ब्रह्म की महती महिमा को बताने का प्रयत्न किया गया है। कथा इस प्रकार है- देवासुर-संग्राम में देवताओं की विजय हुई और इस विजय से देवगण फूले नहीं समा रहे थे। सब-के सब अपनी वीरता का बखान करते नहीं थकते थे और 'ब्रह्म' को जो उनकी विजय के स्रोत थे, भूल ही गए। उनको पाठ पढ़ाने के लिए ब्रह्म एक यक्ष का रूप धारण कर देवताओं के पास पहुँचे। नए आगन्तुक को देख, देवताओं ने अग्नि को इसका परिचय प्राप्त करने के लिए भेजा। अग्नि तुरन्त यक्ष के पास पहुँचा। यक्ष ने पहले ही पूछ लिया, ''तू कौन है?'' अग्नि ने उत्तर दिया, ''मैं अग्नि हूँ, जातवेदस् हूँ।'' यक्ष ने फिर प्रश्न किया, ''तुममें क्या शक्ति है?'' अग्नि ने उत्तर दिया, ''मैं सब-कुछ जला सकता हूँ, उसको राख कर सकता हूँ।'' यक्ष ने अग्नि के सामने एक साधारण तिनका रख दिया और कहा, ''तू इसको जलाकर दिखा।'' अग्नि देवता यह सोचकर हँसे कि इस तिनके को तो वह एक लपट में भस्म कर देंगे, पर वह तो उस तिनके को भरभूर शक्ति लगाने पर भी झुलसा तक न सके और अपना-सा मुँह लेकर देवताओं के पास लौटकर सारा वृत्तान्त सुना दिया।

देवताओं ने फिर वायु को भेजा। अपनी शक्ति का बखान करते उसने यक्ष से कहा कि यदि वह चाहे तो पृथ्वी में जो कुछ है वह सब-कुछ समेटकर उड़ा ले जाए। यक्ष ने फिर वही तिनका दिखाते हुए कहा: ''तू इसको ही उड़ाकर दिखा।'' वायु ने बड़ा भयानक बवंडर उत्पन्न किया पर वह तिनके को हिला तक न सका और लौटकर अपनी असमर्थता का हाल देवताओं को सुनाया। सब चकित रह गए और उन्होंने अपने राजा इन्दर से यक्ष का पता लगाने को भेजा। जैसे ही इन्द्र वहाँ पहुँचे, यक्ष अन्तर्धान हो गया। उसको ढूँढते-ढूँढते इन्दर को उमा नाम की देवी मिली (उमा का अर्थ है 'बुद्धि', प्रत्येक देवता की 'शक्ति' तथा 'बुद्धि' का प्रतीक एक नारी के रूप में ही माना गया है) और उन्होंने बताया कि यक्ष ब्रह्म ही थे जिनके कारण देवता विजयी हुए, पर क्योंकि उनको अपनी विजय पर गर्व हो गया था इसलिए उनके घमण्ड को चूर करने के लिए उन्होंने यह नाटक किया।

यह कथा भी सांकेतिक है, प्रतीकमात्र है। इन्द्र तो जीवात्मा है, अग्नि दृश्य जगत तथा वायु अदृश्यमान भौतिक तत्व है। दोनों अचेतन हैं, जड़ हैं; केवल जीवात्मा ही चेतन तत्त्व है। उपाख्यान का तात्पर्य यह है कि दृश्य तथा अदृश्य तत्व जो कुछ भी हैं वे जड़ हैं। इन सबकी स्थिति केवल चेतन तत्त्व के कारण है। सब-कुछ उसी से अनुप्रणित है, क्रियाशील है। अत: हमें उसी आत्मा को जानने का सतत प्रयत्न करना चाहिए। वही तत्वज्ञान है। आज के युग में 'ज्ञान' को 'फिलॉसफी' कहते हैं और विज्ञान को 'साइन्स'। जब दोनों का समन्वय होता है तभी 'सत्' उदय होता है। इस उपनिषद् का यह संदेश माना जा सकता है कि हमारे जीवन की आधारशिला 'तप', 'दम' और 'कर्म' के ऊपर ज्ञान और विज्ञान की इमारत खड़ी है, और इनके समन्वय में ही मानव-जाति का कल्याण है।

(आनन्द की खोज से साभार)

thearyasamaj.org

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई ने किया अग्निहोत्री (याज्ञिक) परिवारों का सम्मान

आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का 11वॉ वार्षिकोत्सव एवं दैनिक अग्निहोत्री (याज्ञिक) परिवार सम्मान समारोह रविवार दि. 5 अप्रैल 2015 को सायं 5 से 9 बजे तक बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

इस भव्य कार्यक्रम का शुभारम्भ वृहद यज्ञ से हुआ,अनेक आर्य समाजों से प्रतिदिन यज्ञ करने वाले याज्ञिक आर्य नर-नारियों ने 22 हवन कुण्डों पर उपस्थित होकर श्रद्धापूर्वक विशेष हवन सामग्री व शुद्ध गोघृत से आहुतियॉ चढ़ाते हुए रोग निवारण एवं सुख शान्ति, समृद्दि एवं समुन्नति के लिए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की।

यज्ञ ब्रह्मा आचार्या सरस्वती मातृ कन्या गुरूकुल वाराणसी थीं तथा वेद पाठी कन्याएं सुव्रती आर्या एवं वीणा चतुर्वेदी थी।

आर्य समाज सान्तक्रुज के विशाल सभागार में आर्य पुरोहित सभा मुम्बई के सक्रिय सदस्यों द्वारा मन्त्रोच्चारण के साथ कार्यक्रम में उपस्थित समारोह अध्यक्ष श्री मिठाई लाल सिंह, मुख्य अतिथि श्री वेदप्रकाश गर्ग, सम्मानित अतिथि आर्य श्रेष्ठी श्री प्रताप सिंह शूरजी पूर्व प्रधान - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, विशिष्ट अतिथि श्री हरीश आर्य, श्री अरूण अबरोल ,श्री संगीत शर्मा एवं मुम्बई महानगर की महापौर श्रीमति अल्का ताई केरकर आदि का स्वागत किया गया। आचार्य विनोद कुमार शास्त्री कोषाध्यक्ष (आर्य पुरोहित सभा मुम्बई) ने अपने स्वागत भाषण में सभा के गत वर्षो के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए आज के समारोह में उपस्थित महानुभावों का सहर्ष अभिनन्दन किया।

अगला क्रम भजन प्रवचन का सम्मिलित प्रस्तुतीकरण विषय - यज्ञ और संस्कार पर प्रवचन करते हुए युवा वैदिक विद्वान आदरणीय पं. प्रभा रंजन पाठक एवं श्री योगेश कुमार आर्य मुम्बई का मनोहारी अत्यन्त सुन्दर ज्ञानवर्द्धक एवं भाव विभोर कर देने वाले उपदेशों एवं गीतों से उपस्थित श्रोतागण झूम उठे तथा बारम्बार करतल ध्वनि से अपनी प्रसन्नता प्रकट की।

आज से 40 वर्ष पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान, वयोवृद्ध आर्य नेता, आर्य श्रेष्ठी 97 वर्षीय श्री प्रताप सिंह शूरजी के समारोह में उपस्थित् होते ही तालियों की गड-गडाहट व जयघोष के नारों से सभागृह गुंजायमान हो गया। आपने समारोह की प्रशंसा करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। आप को सभा की ओर से प्रशस्ति पत्रा एवं गायत्री मन्त्राकित उपवस्त्रा प्रदान कर सभा अपने आप को गौरवन्वित अनुभव कर रही थी। आपके परिवार में पिछले 125 वर्षो से अनवरत दैनिक यज्ञ की परम्परा का निर्वहन हो रहा है जो हर व्यक्ति के लिए अनुकरणीय है।

समारोह के मुख्य अतिथि माननीय श्री वेदप्रकाश जी गर्ग प्रधान - आर्य समाज चेम्बूर ने पूरे कार्यक्रम की भूरि - भूरि प्रशंसा की। समारोह के विशेष अतिथि श्री अरूण अब्ररोल महामन्त्री - आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई ने कहा आर्य पुरोहित सभा मुम्बई ने अग्निहोत्रा करने वाले याज्ञिक परिवारों का सम्मान करके एक सराहनीय कार्य किया है। सभी पुरोहित धन्यवाद के पात्र हैं। श्री संगीत शर्मा महामन्त्री आर्य समाज सान्तक्रुज ने बताया कि आर्य पुरोहित ही परिवारों को संस्कारों से जोड़े रखते हैं। समारोह के अध्यक्ष श्री मिठाई लाल सिंह आर्य ने कहा इस प्रकार के यज्ञों का आयोजन तथा याज्ञिकों का सम्मान समय-समय पर होते रहना चाहिए। तत्पश्चात् लगभग 75 अग्निहोत्री (याजिक) परिवारों को प्रशस्ति पत्रा एवं गायत्री मन्त्रांकित भगवा उपवस्त्रा देकर सभा के अधिकारियों ने तथा सभी उपस्थित गणमान्य अतिथियों ने सम्मानित किया।

ओम इन्टरटेनमेंट मुम्बई के डाइरेक्टर श्री विश्वनाथ शर्मा ने अपने माता पिता की स्मृति में यज्ञ की वीडियो सीडी का विमोचन एवं वितरण किया।

वैदिक दर्शन प्रतिष्ठान मुम्बई के महामन्त्री श्री परेश भाई पटेल द्वारा अग्नि होत्र मन्त्रो के पत्राक का विमोचन माननीय डा. सोमदेव शास्त्री जी के कर कमलों से लोकार्पण हुआ

आर्य वीर दल के महामन्त्री पं. धर्मधर शास्त्री ने स्वरचित यज्ञ महिमा की आरती का गायन कियाए, जिसको श्रोताओं ने बहुत पसन्द किया। यज्ञ व्यवस्था को यज्ञप्रेमी श्री सन्दीप आर्य (सान्ताक्रुज) एवं श्री श्रवण कुमार गुप्ता (पतंजलि योग समिति मुम्बई) ने अच्छे प्रकार से संभाला। संपूर्ण कार्यक्रम का सफल संचालन आर्य पुरोहित सभा मुम्बई के महामन्त्री आचार्य नरेन्द्र शास्त्री ने किया। पं. नामदेव आर्य प्रधान आर्य पुरोहित सभा मुम्बई ने आगन्तुक महानुभावों का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए सभी का धन्यवाद किया। पं. नचिकेता शास्त्री,पं. भूपेन्द्र शास्त्री, पं. महेश शास्त्री,पं. नरेश शास्त्री एवं श्रीमति सरोज गुप्ता ने प्रीतिभोज व्यवस्था की देख-रेख की।

अन्त में शान्तिपाठ एवं जयघोष और प्रीति भोज के साथ आर्य पुरोहित सभा मुम्बई का 11वॉ वार्षिकोत्सव एवं अग्निहोत्री परिवार सम्मान समारोह सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

वेद वेदान्त सम्मेलन

वैदिक मिशन मुम्बई द्वारा वेद-वेदान्त सम्मेलन का आयोजन आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई में 21-22 मार्च 2015 को किया गया।

इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए समस्त भारत से लगभग 60 विद्वत् गण पधारे थे जिनमें स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यनरेश जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, डा. प्रियंवदा, डा. महावीर मीमांसक, आचार्य मोक्षराज, डा. पवित्रा आदि विद्वान प्रमुख थे।

इस सम्मेलन में अतिथि के रूप में आर्य समाज न्यूयार्क के प्रधान श्री चन्द्रभान जी, आर्य प्रतिनिधि सभा अमेरिका के पूर्व मन्त्री डा. रमेश गुप्ता, आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के प्रधान श्री मिठाईलाल जी पधारे थे। द्विदिवसी कार्यक्रम में डा. कैलाश कर्मठ, श्रीमती कविता आर्या तथा श्री वीरेन्द्र मिश्रा आदि भजनोपदेशकों ने अपने मधुर गीतों से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध किया।

इस कार्यक्रम मे विद्वानों ने त्रैतवाद की सत्यता को प्रमाणित करने के अनेक प्रमाण प्रस्तुत किए। स्वामी आर्यनरेश ने बताया कि गोन्हत्या का वेदों में कहीं भी उल्लेख नहीं है। सभी विद्वान अपने अपने शोध पत्र भी लेकर आए थे।

चतुर्थ सत्र में वैदिक मिशन मुम्बई के मन्त्री द्वारा वैदिक मिशन का परिचय पढ़ा गया तथा प्रणव शास्त्री ने अग्रेंजी भाषा में स्वामी दयानन्द के कार्यो की भूरि भूरि प्रशंसा की। इसी सत्र में इस मिशन द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''षड्दर्शन परिचय'' का विमोचन किया गया तथा इस मिशन के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने बताया ईश्वर जीव व प्रकृति तीनों तत्व अनादि हैं एवं आवश्यक भी। ईश्वर संसार को बनाने, चलाने व प्रलय करने वाला है तथा हमें कर्मो का फल देने वाला है, जीव अच्छे, व बुरे कर्मों का फल भोक्ता तथा निष्काम कर्म से मोक्ष प्राप्त करने वाला है तथा प्रकृति जीव के लिए कर्म व मोक्ष का क्षेत्र है।

इस प्रकार यह सम्मेलन सचमुच काफी सफल व लाभकारी सिद्ध हुआ।

संदीप आर्य
मन्त्री-वैदिक मिशन मुम्बई
मो. : 09969037837

thearyasamaj.org

"क्रोध से बचाव"

क्रोध के स्थायी उपचार– आज विज्ञान ने अधिकांश बीमारियों पर विजय पायी है, परन्तु उसकी विजय कितनी सफल हुई है यह तो सर्वेक्षण ही बतला सकता है। वैज्ञानिक उपचार का सबसे बड़ा दोष तो यह है कि उसका उपचार मात्र क्षणिक होता है। समस्या का स्थायी व अन्तिम उपचार नहीं होता है। क्रोध के सम्बन्ध में भी यही चल रहा है। इसीलिये यदि हमें क्रोध का स्थायी हल ढूँढ़ना है तो हमें ध्यान की ओर बढ़ना होगा, योग का सहारा लेना होगा, क्योंकि योग ही हमारे क्रोध का दमन न करके शमन करेगा। अतः योग व ध्यान आदि के ठण्डे-ठण्डे झोंकों से क्रोधाग्नि को शान्त करें यही उसका स्थायी हल है।

(१) ध्यान– यदि व्यक्ति तरंगातीत अवस्था में चला जाए तो क्रोध स्वतः शान्त हो जाएगा। क्रोध की तरंगें होती हैं पुनरावृत्ति के द्वारा। यदि क्रोध को जल सिंचन न मिले तो वह क्रोध का पौधा मुरझा जाएगा। अध्यात्म का सिद्धान्त है- अपने आपको देखना। यह तरंगातीत अवस्था है। ध्यान का मूल अर्थ एवं उद्देश्य यही है कि हम स्वयं को राग-द्वेष से मुक्त करके केवल जानें, केवल देखें तब क्रोध की वृत्ति के दुष्चक्र को भेदा जा सकता है। वैज्ञानिक औषधियों का प्रभाव मस्तिष्क तक ही रह जाता है, किन्तु तरंगातीत ध्यान वृत्तियों की तरंगों पर भी पड़ता है और क्रोध की तरंगों को ध्यान द्वारा रोका जा सकता है।

जो व्यक्ति पीनीयल ग्लैण्ड (ज्योति केन्द्र) पर सफेद रंग का ध्यान करता है। उसकी नियन्त्रण क्षमता बढ़ जाती है। यह केन्द्र बहुत सारी अन्य वृत्तियों को भी कण्ट्रोल करता है।

(२) प्रातः जागरण– यह कहा जाता है कि ब्रह्ममुर्हूत में उठने वाले का दिन अच्छा जाता है। इसके पीछे वैज्ञानिक कारण भी है। सराटोनिन नामक स्राव, जो मन की शान्ति व प्रसन्नता के लिए उत्तरदायी है, प्रातः चार बजे होता है। यदि व्यक्ति उस समय उठा होता है तो वह मस्तिष्क के उस स्राव को पूर्णतया: ग्रहण कर लेता है और मस्तिष्क पूरे दिन सन्तुलित व सक्षम बना रहता है। सोए व्यक्तियों का स्राव अल्प हो जाता है और फिर वे बेचैनी, चिड़चिड़ापन, उदासी व तनाव के भरे रहते हैं इसीलिये प्रातःकाल का जागरण क्रोध के लिए अच्छा सिद्ध होता हैं।

(३) अनुप्रेक्षा– क्रोध के उपशमन के लिए निम्न प्रकार का चिन्तन किया जाना चाहिए, मनन करना चाहिए-

* मैं क्रोध नहीं हूँ, क्रोध मेरा स्वभाव नहीं है।
* मैंने क्रोध किया तो मैं उसका प्रायश्चित करूँगा।
* मैं कभी भी क्रोध नहीं करूँगा, मैं शान्त रहूँगा।
* क्रोध के द्वारा होने वाले दु:खों को जानो ।
* क्रोधी व्यक्ति नाना प्रकार के कष्टों को भोगता है।
* क्रोध किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकता, अतः मैं आवेश नहीं करूँगा।

(५) सहिष्णुता– सहिष्णुता का अर्थ दब्बूपन व कमजोरी नहीं है, उसका अर्थ है साहस पूर्वक सहना। सहिष्णुता का कवच जिसके पास है उसे कोई पराजित नहीं कर सकता है। शक्तिवान व्यक्ति ही सहिष्णु हो सकता है। आवेश की आग में घी की आहूति के बदले सहिष्णुता के पानी का ठण्डा छींटा डालने में ही बहादुरी है, नहीं तो दूध बेवजह ही उबलकर बाहर गिर जाएगा।

(६) क्षमा– क्षमा का गुण भी क्रोध को काफी हद तक उगने नहीं देता है। नौकर से गलती वश गिलास टूट जाए तो उसे क्षमा करना ही बड़प्पन है जिससे स्वयं को क्रोध नहीं आएगा और औरों को आपके क्रोध की चिंगारियाँ नहीं लगेंगी।

क्रोध व क्षमा दोनों हमारे मस्तिष्क के भाव हैं दोनों प्रणालियाँ साथ-साथ चलती रहती है। क्रोध को पैदा करने वाले तन्त्र भी हमारे मस्तिष्क में हैं और क्रोध को नियन्त्रिन करने वाली प्रणाली भी हमारे मस्तिष्क में हैं। जब हम क्रोध कर रहे होते हैं तो अन्दर से एक अनुभूति होती है कि इतना गुस्सा मत करो अनर्थ हो जाएगा। अतः क्रोध के साथ क्षमा का आदेश भी होता है, बस जरूरत है उसके पालन की। कहा भी गया है- "क्षमा बड़न को चाहिये छोटन को उत्पात" इन्सान वही महान् होता है जिसने क्षमारूपी धर्म को आत्मसात् कर लिया हो।

(७) योगासन– क्रोध की उत्पत्ति का स्थान है हमारे शरीर में स्थित एड्रिनल ग्लैण्डस् नाभि के आसपास का स्थान (मणिपूरक चक्र) क्रोध की उत्तेजना इसी केन्द्र के माध्यम से होती है। यदि इसके स्राव को नियमित किया जा सके तो क्रोध अपने आप वश में हो जाता है। शशांकासन के द्वारा एड्रिनल के स्राव को नियन्त्रित किया जा सकता है। अतः नियमित रूप से शशांकासन करने से क्रोध काफी हद तक नियन्त्रित हो जाता है।

(८) दीर्घश्वास– श्वास और क्रोध का परस्पर गहरा सम्बन्ध है। श्वास छोटा होता है तो क्रोध बढ़ जाता है। श्वास लम्बा व गहरा होता है तो क्रोध घट जाता है। सामान्य व्यक्ति एक मिनट में १५ सांसे लेता है, परन्तु क्रोधादि अवस्था में एक मिनट में २५-५० सांसें तक ले लेता है। क्रोध बढ़ जाने पर यदि दीर्घ श्वास लिया जाए तो क्रोध का पारा स्वमेव नीचे गिर जाता है। यदि व्यक्ति दीर्घ श्वास का अभ्यास कर लेता है तो क्रोध की सम्भावना घट जाती है।

इसी प्रकार समवृत्ति श्वास प्रश्वास से Left Mind तथा Right Mind भी में समन्वयता आ जाती है और संवेग का सन्तुलन बना रहता है।

(९) मन्त्र जाप– हमारे धर्म ग्रन्थों में मन्त्र जाप का बहुत वृहद् विवरण है जिसके जाप से हमें मानसिक शान्ति, प्रसन्नता व आनन्द की

thearyasamaj.org

प्राप्ति होती है और जो हमारे काम, क्रोध, लोभ आदि दुष्वृत्तियों को उपशान्त भी करता है। अत: क्रोध आने पर ओ३म्, अर्हं, गायत्री मन्त्र का बारम्बार जाप व्यक्ति को शान्त कर देता है।

(१०) **मौन-** क्रोध को मारने का सबसे बड़ा कवच है 'मौन'। कहा भी गया है एक चुप लाख सुख। क्रोध में जलते हुए, उसकी आग में झुलसते हुए व्यक्ति पर मौन का कम्बल डाल दें तो आग वहीं बन्द हो जाएगी।

इस प्रकार विवेक चेतना जागृत करके व्यक्ति क्रोध का रेचक कर सकता है और आत्मानन्द का आस्वादन ले सकता है। क्योंकि क्रोध का शमन होने पर ही व्यक्ति तनाव मुक्त हो सकता है और तनाव मुक्त आदमी ही आत्मानन्द का अनुभव कर सकता है।

क्रोध शनम के कुछ उपाय

* क्रोध का उभार होने पर श्वास-संयम (कुंभक) का प्रयोग क्रोध-शमन का प्रभावी तरीका है इससे स्वल्प क्षणों में ही क्रोध का ज्वर शान्त हो जाता है। कुम्भक का प्रयोग गाड़ी में ब्रेक की तरह काम करता है।
* क्रोध आने पर संकल्पपूर्वक मौन का अभ्यास अथवा स्थान परिवर्तन भी क्रोध-विजय का सफल प्रयोग है। यह अनिष्ट आशंका से बचने का सुन्दर समाधान है। मौन शक्ति-अपव्यय से बचने में सहयोग करता है।
* क्रोध के क्षण उपस्थित होने पर अपनी जिह्वा को तालु पर लगाने का प्रयोग भी उत्तम है। इससे स्वत: ही वाणी-संयम हो जाता है और उत्पन्न क्रोधावेश में गतिरोध उत्पन्न हो जाता है।
* आवेग और आवेश को न्यून करने में ललाट के मध्य भाग में ज्योति केन्द्र पर सफेद रंग का ध्यान अत्यन्त लाभकारी है। यह क्रोध-शमन का अत्यन्त प्रभावशाली प्रेक्षा-प्रयोग है। इससे चित्त में शान्ति का विकास होता है।
* मैं हर परिस्थिति में शान्त, सन्तुलित और प्रसन्न रहूँगा-दीर्घ श्वास के साथ ललाट पर ध्यान केन्द्रित कर इस शब्दावली का प्रयोग भाव-परिवर्तन में सहयोगी बनता है।
* क्रोध परिवार और समाज के विघटन का महत्त्वपूर्ण कारण है। चित्त की अशान्ति का बड़ा निमित्त है। अनेक व्याधियों को खुला निमन्त्रण है तथा प्रचुर कर्म-बन्धन का हेतु है। इस प्रकार इसे दोषागार समझकर आत्मचिन्तन, आत्म-निरीक्षण और अनुप्रेक्षा का विषय बनाकर जीवन-शैली में वांछित रूपान्तरण घटित किया जा सकता है और तनाव मुक्त जीवन जिया जा सकता है।

-संदीप आर्य
मन्त्री-वैदिक मिशन, मुम्बई

Management of
OBESITY
WEIGHT REDUCTION

A Drugless Treatment with Yoga and Alternative Therapy With Stomach and colon Cleaning.

Date	:	**Thu. 07.05.2015 to Wed. 27.05.2015**
Time	:	7.30 a.m. to 8.30 a.m. Sat : Class at 7.00 am
Fees	:	Rs. 2,000/- **Sun. :** HOLIDAY
Venue	:	**ARYA SAMAJ MANDIR,** Linking Road, Santacruz (W)
Course Director	:	Yogashiromani **RAGHAVA SOMESHWAR**
Enquiry	:	**98692 67131 / 96187 29682 / 2660 2800**

Management of
BETTER EYE-SIGHT

A Drugless Treatment With Yoga & Alternative Therapy, Sun Treatment, Eye Tonic, Bal game, Track, Bar Swing, Vapour Treatment, Cold Pack.

Date	:	**Wed. 06.05.2015 to Tue. 26.05.2015**
Time	:	8.30 a.m. to 9.30 a.m. Sat : Class at 7.00 am
Fees	:	Rs. 2,000/- **Sun. :** HOLIDAY
Venue	:	**ARYA SAMAJ MANDIR,** Linking Road, Santacruz (West).
Course Director	:	**YOGASHIROMANI RAGHAVA SOMESHWAR**
Enquiry	:	**98692 67131 / 96187 29682 / 2660 2800**

thearyasamaj.org

सहिष्णुता-सदाचार-समृद्धि-अर्थशास्त्र-गुणवत्ता

पुरुषोत्तमदास गोठवाल

महाराजा मनुजी ने प्राणी मात्र के कल्याणार्थ उस अविकसित युग में नियम उपनियम बनाये थे, इनमें अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, विवेकशीलता, अक्रोधि, संयमि आदि अनेक विशेषताओं से अलंकृति किया। भारत की त्याग, तपस्या, परसेवा, धर्मपरायण आदि का समावेश कर मानव को महामानव बना कर देव तुल्य संज्ञा प्रदान की, दोनों के शुभ आचरण और शुभ कर्मो के द्वारा यह हमारा भूभाग आर्या-वृत से सम्मानित हो अतीत में जाना जाने लगा। देव दयानन्द जी ने नारी की उत्पीड़नता को समझ कर नारी उत्थान का सर्वप्रथम कार्य किया। आर्यावृत देश जो कृषि प्रधान तथा महान नारीयों के द्वारा वीरता बलिदानी, शौर्यता, पवित्रता, और आन बान शान की समृध्यता से परिपूर्ण, विद्या आदि से अलंकृित नारी श्रेष्ठता की द्यौतिकी बनती रही अर्थात सर्वकाल में पूज्या बनी है जिस पर हमें गर्व है।

धर्म की पोथियों में कर्म प्रधानता और सहिष्णुता का समावेश करना आज की जरूरत है, तब ही हम इस आतंकवाद रुपी राक्षस का संहार कर पायेगें, सारा सभ्य संसार जिससे दुखी हो कर निराशाजनक स्थिति में खड़ा नजर आया है।

आज के अर्थ प्रधान युग में व्यापारिक रिश्तों के आदान प्रदान के लिये शॉन्ति और भाई चारे की परम आवश्यकता आँकि जा सकती है। भारत की व्यापारिक रिश्तों के कारण ही पड़ोसी सभी देशो के भू भागों में विभिन्न जिन्सो का व्यापार करना और अन्य दुसरी जिन्सो जैसे, पपड़ा, चाय, गर्म मसाले, केशर, ड्राई फ्रूटस, मेवे आदि-आदि का सुगमता पूर्वक व्यापार होता आ रहा है।

इस प्रकार भारत व पड़ोसी देशो के लोगों में समृद्धि और भाईचारे की गतिविधियाँ अधिक पनपती रही और अलग-अलग धर्म और जातियाँ होने पर भी एक दूसरे में प्रेम व्यवहार, विकसित होता रहा है। ''जिओ और जीने दो'' की सार्थक पहल करते आ रहे है। विश्व की शान्ति की पहल का मूलमंत्र दिया है।

अन्य पडोसी देशवासियों से मित्रवत व्यवहार और भारत की शॉन्ति तथा समृद्धि के कारण पश्चिम से हमारे ऊपर अनेको बार हमले हुये और यवनो ने लूटपाट करते रहे जो इतिहास गवाह बना है। हमारी संस्कृतिक धरोहर जो आदर्शवाद की प्रष्ठ भूमि में धार्मिक अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, सहअस्तित्व पर आधारित रही फूलति फलति रही, लुटेरों ने खूब लूटा, पर आज तक दिन प्रति दिन समृद्धि में कोई कमी नहीं रही है।

ऋगवेद में समस्त जीवों को आचरण द्वारा प्रकाश डालकर भौतिक एश्वर्यो तथा अपने परम लक्ष्य की प्राप्ति कर परमानन्द और सुखी रहने का आदेश पढ़े।

''यस्मिन्वृक्षे मध्वद: सुपर्णा निविन्ते सुवते चाधि विश्वे।
तस्येदाहु: पिप्पलं स्वद्वग्रे तन्नोत्रशद्य: पितरे न वेद ।।'' ऋ १/१६४/२२

अर्थात:- इस संसार में जीवों के द्वारा जैसा कर्म किया गया है, वैसा ही ईश्वरकृत न्याय से उन्हें अवश्य फल भोगना पड़ता है। कर्म और जीवों का भी नित्य समबन्ध है। जो परमात्मा को न जानकर और उनके गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल आचरण नहीं करके अपनी इच्छानुसार आचरण करते है, वे निरन्तर दुखी: होते है, और जो इसके विपरीत (आचरण) वाले है वे सदा आनन्दित होते है। आचरण की परिभाषा में ''कनक'' अर्थात प्रलोभन होना (घुसखोरी) भ्रष्टाचार करपशन आदि से समाज की आय में कितना भारी नुकसान राष्ट्र को उठाना पड़ रहा है किसी कवि की पंक्तियों पर ध्यान आकर्षित कर रहा हूँ। ''कनक कनक से सो गुना मादकता अधिकाय।

वा खाये बौराय जग, वो पाये बौराय।।'' (कनक= धतुरा, शराब व स्वर्णदि पदार्थ) वेद भगवान का शॉन्ति और समृद्धि का मूलमंत्र उपरोक्त मंत्रान्श से लोगो के आचरण पर विशेष जोर देकर हमारा कितना कल्याण किया है।

''अर्थ प्रधान'' ने ही सारे ''अनर्थो'' को जन्म देकर क्या-क्या पापकर्मों में लिप्त मानव मस्त हो रहा है यह विडंबना नहीं तो क्या है? "A Men is known by his deeds"

एस-८, बी
कबीर मार्ग बनीपार्क जयपुर ३०२०१६
फोन : ०१४१-२२०५९९१

धन से ..

धन से भोजन खरीद सकते हैं	-	भूख नहीं
धन से मूर्ति खरीद सकते हैं	-	भगवान नहीं
धन से बिस्तर खरीद सकते हैं	-	निंद्रा नहीं
धन से चश्मे खरीद सकते हैं	-	दृष्टि नहीं
धन से मनुष्य खरीद सकते हैं	-	वफादारी नहीं
धन से दवाई खरीद सकते हैं	-	स्वास्थ्य नहीं
धन से पुस्तक खरीद सकते हैं	-	ज्ञान नहीं
धन से कलम खरीद सकते हैं	-	विचार नहीं
धन से नौकर खरीद सकते हैं	-	सेवक नहीं
धन से स्त्री खरीद सकते हैं	-	पत्नि नहीं
धन से शस्त्र खरीद सकते हैं	-	हिम्मत नहीं
धन से मजबूरी खरीद सकते हैं	-	खुद्दारी नहीं
धन से सुख-साधन खरीद सकते हैं	-	स्वास्थ्य नहीं

thearyasamaj.org

नूतन निष्काम पत्रिका वर्ष-६ अंक-४ मुम्बई अप्रैल - २०१५ | पृष्ठ-१६ | मूल्य- रु. ९/-

वैशाख २०७१ (२०१५)

Post Date : 25-02-2015

MH/MR/N/136/MBI/-13-15
MAHRIL 06007/31/12/2015-TC

पोष्ट आफिस : सांताक्रुज़ (प.)

आर्य समाज सान्ताक्रुज मुम्बई का मुखपत्र

संपादक : संगीत आर्य

मुद्रक एवं प्रकाशक : चन्द्रपाल गुप्त द्वारा कृष्ण प्रिंटींग प्रेस, २६, मंगलदास रोड, मुंबई-२. से मुद्रित कराकर आर्य समाज भवन, वी. पी. रोड, (लिंकिंग रोड़), सान्ताक्रुज़ (प.) मुंबई-४०० ०५४. से प्रकाशित किया। दूरभाष : २६६० २८००/२६६०२०७५

प्रति, ______________________

टिकट

वैदिक मिशन मुंबई

आयोजित

वेद वेदांत सम्मेलन के कुछ चित्र